AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

DSSSB

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

स्पेशल एडुकेटर एवं स्पेशल एजुकेशन शिक्षक

भर्ती परीक्षा -2021

वर्ष 2018 के PRT एवं TGT के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट का समावेश

PRT एवं TGT के सम्पूर्ण
पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तक

2in1 BOOK की मुख्य विशेषताएं

- नवीनतम नीतियों, तथ्यों एवं आंकड़ों के साथ विगत वर्षों के प्रश्नों पर आधारित महत्वपूर्ण topics का थ्योरी में समावेश
- **PRT एवं TGT 2018** के प्रश्नों एवं अभ्यास प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

Best Special Education textbook in market !

इस पुस्तक को पढ़कर आप निश्चित रूप से DSSSB स्पेशल एडुकेटर एवं स्पेशल एजुकेशन शिक्षक भर्ती परीक्षा में अच्छे अंक ला सकेंगे।

Code	Price	Pages
CB739	₹ 249	304

DSSB

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

स्पेशल एडुकेटर एवं स्पेशल एजुकेशन शिक्षक

भर्ती परीक्षा -2021

PRT एवं TGT के सम्पूर्ण
पाठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तक

Prepared by:

Examcart Experts

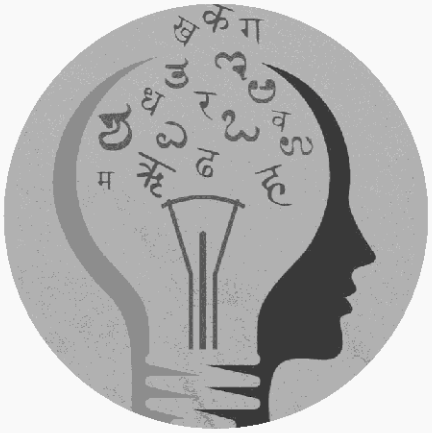

AGRAWAL GROUP OF PUBLICATIONS

EduCart | Agrawal Publications | AGRAWAL EXAMCART

Book Name	DSSSB स्पेशल एडुकेटर एवं स्पेशल एजुकेशन शिक्षक भर्ती परीक्षा 2021
Editor Name	Rahul Agarwal
Edition	Latest
Published by	Agrawal Group Of Publications (AGP)
© All Rights reserved.
ADDRESS (Head office)	28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002
CONTACT	quickreply@agpgroup.in We reply super fast
BUY BOOK	www.examcart.in Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	8937099777
PRINTED BY	Schoolcart
DESKTOP PUBLISHING	Agrawal Group Of Publications (AGP)
ISBN	978-93-91401-39-9
© COPYRIGHT	Agrawal Group Of Publications (AGP)

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

यह पेज अवश्य पढ़ें।

(जानिए हम आपकी परीक्षा की तैयारी में कैसे मदद करते हैं)

कुछ ही वर्षों में Agrawal Examcart की पुस्तकें शिक्षकों और छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय हो गयी हैं। हमारे Subject Experts पुस्तकों की विषय सामग्री पर विशेष ध्यान देते हैं। परीक्षा के पठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तकों और गाइडबुक्स के माध्यम से हम आपको syllabus-wise सटीक और सरल भाषा में पुस्तकें प्रदान करते रहे हैं जिससे आपको कम समय में परीक्षा की तैयारी में मदद मिले। किसी भी परीक्षा सम्बन्धी practice set को तैयार करते समय, हमारा उद्देश्य यही रहता है कि आप अपनी परीक्षा की तैयारी का स्वयं मूल्यांकन 90% से अधिक सटीकता से कर सकें। यही कारण है कि प्रत्येक Practice set पिछले परीक्षा पैटर्न के अनुसार तैयार किया जाता है और इसमें बहुत अच्छे प्रश्नों का संग्रह होता है।

"हमारा उद्देश्य सिर्फ आपको पुस्तक उपलब्ध करना ही नहीं बल्कि आपके पुस्तक खरीदने से लेकर पुस्तक पूरा पढ़ने तक के सफर में हम आपके सारथि होंगे। इसीलिए हमने कुछ ऐसी सेवाएँ (नीचे दी गई) शुरू की हैं जिनकी मदद से हम आपकी सहायता कर पाएंगे।"

अपने Phone पर इस पुस्तक के संशोधित Updates प्राप्त करें!

हर बार जब हम इस पुस्तक में संशोधन या कोई भी नया update करेंगे तो उसकी जानकारी हम आपके Whatsapp Number पर भेजेंगे जिससे आपको इस बुक का नया संस्करण न लेना पड़े और आपको free में Updated Content मिल जाये। इसके लिए आपको नीचे दिए हुए फॉर्म को भरना होगा जिससे हम आपको Updated content भेज पाएं। ध्यान दें कि फॉर्म भरते समय Book Code सही डालें नहीं तो आपको किसी और बुक के Updates मिलेंगे। बुक का कोड पुस्तक के पीछे कवर पर नीचे से बायीं तरफ दिया है जो 'CB' से शुरू होता है|

Form link ☛ http://bit.ly/exmcrtrev or Scan Code ☛

Whatsapp Helpline No. (पुस्तक में गलती या परीक्षा सम्बंधित जानकारी)

परीक्षाओं से समबन्धित किसी भी तरह की जानकारी जैसे-पाठ्यक्रम, पेपर पैटर्न, सबसे अच्छी पुस्तकें, परीक्षा सम्बंधित महत्वपूर्ण Dates, किसी प्रश्न का हल एवं **हमारी पुस्तकों में किसी भी तरह की गलती पाए जाने पर हमारे whatsapp Helpline नंबर पर संपर्क करें**| हमारी Experts की Team आपको उससे सम्बंधित सही जानकारी उपलब्ध कराएगी|

Whatsapp number ☛ 8937099777 or Scan Code ☛

Join Telegram Group

Agrawal Examcart ने **Examcart Live** के नाम से एक नया **Telegram Group** शुरू किया है जिससे आपको कई तरह से परीक्षा की तैयारी में मदद मिलेगी

- नवीनतम परीक्षा का पूर्ण **Notification** और पाठ्यक्रम के **Updates** प्राप्त करें।
- नई परीक्षाओं से सम्बंधित best नवीनतम पुस्तकों के **Updates** प्राप्त करें।
- नई परीक्षाओं से सम्बंधित **Free Study material** प्राप्त करें।
- अपनी परीक्षा की तैयारी का परीक्षण करने के लिए **weekly practice problem sheet** प्राप्त करें।

Join us on Telegram: ☛ **t.me/Examcartlive or Scan Code ☛**

Read & Practice Online

हमारी Android App और Website पर पढ़ने की जानकारी अगले पृष्ठ पर दी गयी है|

ANDROID APP ON
Google Play

App की विशेषताएं!!!

- एकमात्र app जिसमें आपको परीक्षाओं से सम्बंधित सभी contents नए पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न अनुसार up-to-date मिलेंगे।
- App पर Course को खरीदने से पहले उसकी गुणवत्ता जानने के लिए Free content दिया है |
- हमारे App पर 100 से अधिक परीक्षाओं पर courses आकर्षक मूल्य पर उपलब्ध हैं |
- App पर Online Quiz देते समय आपको वास्तविक online परीक्षा जैसा अनुभव प्राप्त होगा।

Examcart Android App को चलाने की जानकारी

Step 1: **Google playstore** से **Examcart** की **App** को **Download** करें। **Examcart App** को **Playstore** पर देखने का link **http://bit.ly/examcartapp2021**

Step 2: **Examcart App** में **login** करें और Category Section में जाके अपने **Exam** से सम्बन्धित **Course** को देखें |

हमारे **app** के **features** एवं उसकी कार्य प्रणाली को समझने के लिए **15 seconds का Tutorial** देखें।
http://bit.ly/exmcrtdemo

Laptop, Desktop या iphone Users के लिए

Step 1: Mobile या Laptop Browser पर www.examcart.sikhaoo.com टाइप करें।

Step 2: हमारे Course को use करने के लिए **Sign in** करें।

सबसे बड़ी समस्या

हर परीक्षा में 15% तक सामान्य ज्ञान के प्रश्न करंट अफेयर्स से सम्बंधित होते हैं। इनकी तैयारी के लिए महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स का चयन करना और उनसे सम्बंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं को लम्बे समय तक याद रखना सबसे बड़ी समस्या है।

आइये देखें TOPPERS कैसे इस समस्या को हल करते हैं।

3 SECRETS जिससे Toppers करंट अफेयर्स में अच्छे marks लाते हैं —

समाचारों को प्रश्नोत्तर प्रारूप (MCQ) में लम्बे समय तक याद रखना बहुत आसान होता है।

प्रश्नों को उनके विषय और घटनाक्रम के अनुसार विभाजित करने से जल्दी revision में बहुत आसानी होती है।

समाचार के सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रश्न के उत्तर में शामिल करने से उस समाचार सम्बंधित प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते है।

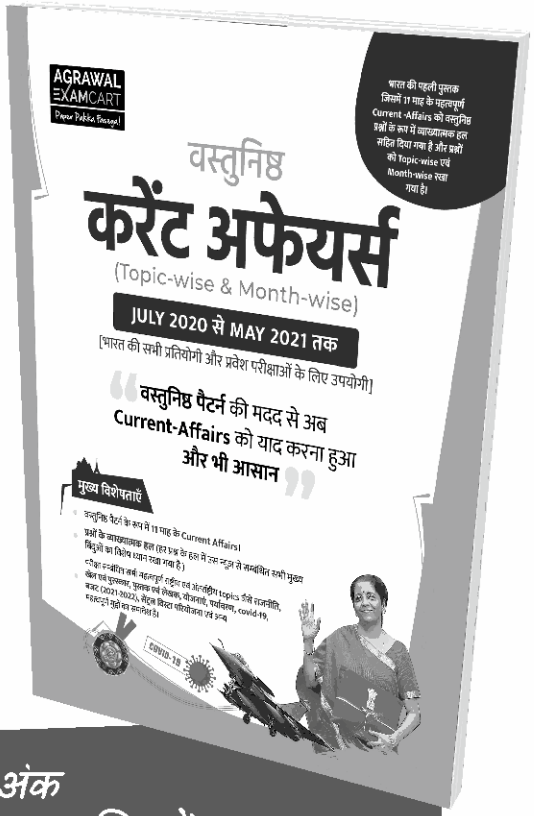

करंट अफेयर्स में अच्छे अंक लाने के लिए भारत की पहली पुस्तक जिसमें वार्षिक महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स (जुलाई 2020 से मई 2021) को वस्तुनिष्ठ प्रश्नों एवं उनके व्याख्यात्मक हल के साथ topic-wise एवं month-wise प्रस्तुत किया गया है।

Free sample इस link पर पढ़ें

http://bit.ly/exmcrtcafa

Amazon से खरीदने का link

https://amzn.to/3gssO1s

DSSSB (PRT & TGT) वर्ष 2018 के प्रश्नों का विश्लेषणात्मक चार्ट

क्र. स.	अध्याय का नाम	PRT - 22/07/2018	TGT - 29/07/2018
1	शिक्षा मनोविज्ञान, विशिष्ट शिक्षा, एकीकृत शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा	8	1
2	विशिष्ट शिक्षा का इतिहास तथा शिक्षा दर्शन	3	2
3	बाल विकास एवं वृद्धि	2	7
4	अनुवांशिकता तथा वातावरण	2	1
5	विशिष्ट बालकों का परिचय, विशिष्टताओं के कारण, रोकथाम, शीघ्र हस्तक्षेप तथा जाँच	–	–
6	विशिष्ट शिक्षा हेतु राष्ट्रीय संस्था, अन्तर्राष्ट्रीय निकाय, विभिन्न अधिनियम तथा नीतियाँ (शिक्षा नीति 2020-21 के विशेष सन्दर्भ में)	5	4
7	सीखना (अधिगम) एवं इनके सिद्धान्त तथा स्मृति	6	5
8	बुद्धि	1	1
9	व्यक्तित्व	1	1
10	शिक्षणशास्त्र व शिक्षण अभिक्षमता	10	15
11	दिव्यांग जन सशक्तिकरण –1995 के अनुसार विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण	25	12
12	विकलांग बालकों के लिये राष्ट्रीय न्यास कार्यक्रम –1999	17	10
13	दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम – 2016	–	–
14	दिव्यांग बालकों की आंकलन व मूल्यांकन प्रणाली, सांख्यिकी व दूरस्थ शिक्षा	10	8
15	दिव्यांग बालकों का निर्देशन तथा परामर्श	–	–
16	अन्य महत्वपूर्ण विषय	26	16
	कुल	**116**	**83**

विषय-सूची

अध्याय | **पृष्ठ सं.**

1. शिक्षा–मनोविज्ञान, विशिष्ट शिक्षा, एकीकृत शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा 1-19
(Educational-Psychology, Special Education, Integrated Education and Inclusive Education)

1.1 शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Education)
1.2 शिक्षा की प्रकृति (Nature of Education)
1.3 शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Education)
1.4 शिक्षा की प्रक्रिया (Process of Education)
1.5 शिक्षा के प्रकार (Types of Education)
1.6 मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषाएँ, प्रकृति, क्षेत्र तथा शाखाएँ (Meaning, Definitions, Nature, Scope and Branches of Psychology)
1.7 मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Psychology)
1.8 मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Psychology)
1.9 मनोविज्ञान की शाखाएँ और उनका अध्ययन क्षेत्र (Branches and its Study-scope of Psychology)
1.10 शिक्षा–मनोविज्ञान (Educational-Psychology)
1.11 शिक्षा–मनोविज्ञान की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Educational Psychology)
1.12 शिक्षा–मनोविज्ञान के उद्देश्य (Objectives of Educational-Psychology)
1.13 शिक्षा–मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Educational-Psychology)
1.14 विशिष्ट शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Special Education)
1.15 विशिष्ट शिक्षा की अवधारणा (Concept of Special Education)
1.16 विशिष्ट शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Special Education)
1.17 विशिष्ट (विशेष) शिक्षा का कार्यक्षेत्र (Scope of Special Education)
1.18 एकीकृत शिक्षा का अर्थ (Meaning of Integrated Education)
1.19 एकीकृत शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Integrated Education)
1.20 एकीकृत शिक्षा का महत्त्व (Importance of Integrated Education)
1.21 एकीकृत शिक्षा के उद्देश्य (Objective of Integrated Education)
1.22 समावेशी शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Inclusive Education)
1.23 समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Inclusive Education)
1.24 विशिष्ट, एकीकृत तथा समावेशी शिक्षा के मध्य अन्तर (Difference Among the Special, Integrated and Inclusive Education)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

2. विशिष्ट शिक्षा का इतिहास तथा शिक्षा दर्शन 20-33
(History of Special Education and Educational Philosophy)

2.1 विशिष्ट शिक्षा का इतिहास (History of Special Education)
2.2 विशिष्ट शिक्षा का विकास (Development of Special Education)
2.3 दर्शन (Philosophy)
2.4 दर्शन का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Philosophy)
2.5 दर्शन के सम्प्रदाय (School of Philosophy)

वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

3. बाल विकास एवं वृद्धि **34-44**
(Child Development and Growth)

3.1 वृद्धि एवं विकास की अवधारणा (Concept of Growth and Development)
3.2 वृद्धि तथा विकास की परिभाषाएँ (Definitions of Growth and Development)
3.3 विकास की विशेषतायें (Characteristics of Development)
3.4 वृद्धि एवं विकास में अन्तर (Difference Between Growth and Development)
3.5 वृद्धि की विशेषतायें (Characteristics of Growth)
3.6 विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting of Development)
3.7 विकास के चरण (Steps of Development)
3.8 विकास के सिद्धान्त (Principles of Development)
3.9 बाल विकास के सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of the Principles of Child Development)
3.10 विकास की अवस्थाएँ (Stages of Development)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

4. आनुवंशिकता तथा वातावरण **45-54**
(Heredity and Environment)

4.1 आनुवंशिकता तथा वातावरण का अर्थ (Meaning of Heredity and Environment)
4.2 वातावरण के प्रकार (Types of Environment)
4.3 आनुवंशिकता अथवा वंशानुक्रम का नियम (Laws of Heredity)
4.4 वंशानुक्रम की प्रक्रिया (Process of Heredity)
4.5 बालक पर वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity on Child)
4.6 बालक पर वातावरण का प्रभाव (Influence of Environment on Child)
4.7 वंशानुक्रम व वातावरण का सम्बन्ध एवं सापेक्षिक महत्व (Relation and Comparative Importance of Heredity and Environment)
4.8 बालक के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका (Role of Heredity and Environment in the Development of Child)
4.9 शिक्षक के लिए वंशानुक्रम व वातावरण का महत्व (Importance of Heredity and Environment for Teacher)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

5. विशिष्ट बालकों का परिचय, विशिष्टताओं के कारण, रोकथाम, शीघ्र हस्तक्षेप तथा जाँच **55-69**
(Introduction, Causes, Prevention, Early Intervention and Screening of Disabled of Special Children)

5.1 विशिष्ट बालक की परिभाषाएँ (Definitions of Exceptional Child)
5.2 विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों का वर्गीकरण (Classification of Children with Special Needs)

5.3 बौद्धिक रूप से विशिष्ट बालक (Intellectually Exceptional Children)
5.4 शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक (Physically Exceptional Children)
5.5 सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक (Socially Exceptional Children)
5.6 संवेगात्मक रूप से विशिष्ट बालक (Emotionally Exceptional Children)
5.7 विशिष्टताओं के कारण (Causes of Exceptionals)
5.8 विशिष्टताओं की रोकथाम (Prevention of Disability)
5.9 शीघ्र हस्तक्षेप तथा जाँच (Early Intervention and Screening of Disabled or Special Children)
5.10 बाधिता, असमर्थी तथा अपंग बच्चों का प्रत्यय (Concept of Impairment, Disability and Handicap)
5.11 विशिष्ट बालकों के प्रकार (Types of Exceptional Children)
5.12 विशिष्ट बालकों की आवश्यकताएँ और समस्याएँ (Needs and Problems of Exceptional Children)
5.13 विशिष्ट बालकों के शैक्षिक कार्यक्रम (Educational Programmes of Exceptional Children)
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

6. विशिष्ट शिक्षा हेतु राष्ट्रीय संस्थान व अन्तर्राष्ट्रीय निकाय विभिन्न अधिनियम तथा नीतियाँ (शिक्षा नीति 2020-21 के विशेष सन्दर्भ में) **70-89**
(National Institutes and International Bodies for Special Education Different Acts and Policies (With Special Reference to the Educational Policy 2020-21)

6.1 विशिष्ट शिक्षा हेतु राष्ट्रीय संस्थान (National Institute for Special Education)
6.2 दिव्यांग व्यक्तियों सम्बन्धी कानून (Law for The Divyangjan)
6.3 विशिष्ट शिक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय निकाय (International Bodies for Special Education)
6.4 राष्ट्रीय नीतियाँ और अधिनियम (National Policies and Acts)
6.5 सर्व शिक्षा अभियान [Sarva Shiksha Abhiyan (SSA)]
6.6 राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan)
6.7 राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के उद्देश्य (Objectives of Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan)
6.8 शिक्षा का अधिकार (Right to Education)
6.9 'शिक्षा का अधिकार' अधिनियम के सुपरिणाम (Good Results of 'Right to Education Act')
6.10 मध्याह्न भोजन योजना (मिड–डे मील प्रोग्राम) (Mid-day Meal Programme)
6.11 राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan–RMSA)
6.12 राष्ट्रीय विकलांग जन–नीति, 2006 (National Policy for Persons with Disabilities, 2006)
6.13 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 (कोठारी कमीशन) की संस्तुतियाँ [Recommendations of Indian Education Commission (Kothari Commission) 1964-1966]
6.14 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, (National Education Policy)
6.15 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के उद्देश्य (Objectives of National Policy of Education, 1986)
6.16 राममूर्ति कमेटी, 1992 (Ramamurty Committee, 1992)
6.17 विकलांग व्यक्ति शिक्षा अधिनियम, 2004 [Individuals With Disabilities Education Act (IDEA) 2004]
6.18 पी. डब्ल्यू. डी. अधिनियम, 1995 (PWD Act, 1995)
6.19 भारत में बाधितों के लिए राष्ट्रीय संस्थान [National Institutions for Impaired in India]
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

7. सीखना (अधिगम) एवं इसके सिद्धान्त व स्मृति **90-123**
(Learning, Its Theories and Memory)

7.1 सीखना/अधिगम की अवधारणा (Concept of Learning)
7.2 सीखने/अधिगम की विशेषताएँ (Characteristics of Learning)
7.3 सीखने की प्रकृति (Nature of Learning)
7.4 सीखने को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting the Learning)
7.5 अधिगम के सिद्धान्त (Principles of Learning)
7.6 थॉर्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त (Trial and Error Theory of Thorndike)
7.7 पावलॉव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त (Pavlov's Classical Conditioning Theory)
7.8 स्किनर का सक्रिय अनुबन्धन का सिद्धान्त (Skinner's Operant Conditioning Theory)
7.9 अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त या सूझ का गेस्टाल्ट सिद्धान्त (Gestalt's Theory of Learning or Insight Theory)
7.10 ब्रूनर का सीखने का सिद्धान्त (Bruner's Theory of Learning)
7.11 बैण्डूरा का सामाजिक सीखने का सिद्धान्त (Bandura's Social Learning Theory)
7.12 हल का सबलीकरण सिद्धान्त (Hull's Reinforcement Theory)
7.13 टॉलमैन का चिह्न अधिगम सिद्धान्त (Tolman's Sign Learning Theory)
7.14 लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त (Lewin's Field Theory)
7.15 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Piaget's Theory of Cognitive Development)
7.16 जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त (Jean Piaget's Theory of Moral Development)
7.17 मैस्लो का मानवतावादी सिद्धान्त (Maslow's Humanistic Theory)
7.18 वाइगोत्स्की का सिद्धान्त (Vygotsky's Theory)
7.19 कोह्लबर्ग का सिद्धान्त (Kohlberg's Theory)
7.20 मैस्लो का मानवतावादी सिद्धान्त (Maslow's Humanism Theory)
7.21 स्मृति (Memory)
7.22 स्मृति का अर्थ (Meaning of Memory)
7.23 स्मृति की परिभाषाएँ (Definitions of Memory)
7.24 अच्छी स्मृति की विशेषताएँ (Characteristics of Good Memory)
7.25 स्मृति के प्रकार (Types of Memory)
7.26 स्मृति उन्नत करने की रणनीति (Strategies for Improving Memory)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

8. बुद्धि **124-142**
(Intelligence)

8.1 बुद्धि का अर्थ (Meaning of Intelligence)
8.2 बुद्धि की परिभाषाएँ (Definitions of Intelligence)
8.3 बुद्धि के प्रकार (Types of Intelligence)
8.4 बुद्धि के सिद्धान्त (Theories of Intelligence)
8.5 भारत में बुद्धि परीक्षण (Intelligence Testing in India)
8.6 बुद्धि लब्धि या बुद्धि का मूल्यांकन (Intelligence Quotient or Evaluation of Intelligence)
8.7 विशिष्ट बालकों के लिए बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test for Special Children)

8.8 विशिष्ट बालकों की मापन विधियाँ (Measurement Methods of Specific Children)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

9. व्यक्तित्व (Personality) **143-158**

9.1 व्यक्तित्व का संप्रत्यय (Concept of Personality)
9.2 व्यक्तित्व की परिभाषाएँ (Definitions of Personality)
9.3 व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting of Personality)
9.4 व्यक्तित्व के सिद्धान्त (Theories of Personality)
9.5 विशिष्ट बालकों का व्यक्तित्व मापन (Personality Measurement of Special Needs Children)
9.6 प्रक्षेपी विधियाँ (Projective Methods)
9.7 बालक बोध परीक्षण (CAT or Children's Apperception Test)
9.8 निर्धारण मापनी (Rating Scales)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

10. शिक्षण शास्त्र व शिक्षण अभिक्षमता (Pedagogy and Teaching Aptitudes) **159-173**

10.1 शिक्षण का अर्थ (Meaning of Teaching)
10.2 शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching)
10.3 शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)
10.4 शिक्षण का वातावरण (Environment of Teaching)
10.5 शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching)
10.6 शिक्षण के सिद्धान्त (Principles of Teaching)
10.7 शिक्षण के स्तर (Levels of Teaching)
10.8 शिक्षण के सूत्र (Teaching of Formulas)
10.9 शिक्षण प्रविधियाँ (Teaching of Methods)
10.10 सम्प्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)
10.11 सम्प्रेषण की विशेषताएँ (Characteristics of Communication)
10.12 सम्प्रेषण की प्रक्रिया (Process of Communication)
10.13 सम्प्रेषण के प्रकार (Types of Communication)
10.14 सम्प्रेषण के तरीके (Methods of Communication)
10.15 शिक्षण अभिक्षमता या अभियोग्यता (Teaching Aptitudes or Teaching Skills)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

11. दिव्यांगजन सशक्तिकरण–1995 के अनुसार विशिष्ट बालकों का वर्गीकरण **174-200**
(Classification of Special Children According to Persons with Disability Act, 1995)

11.1 पीडब्ल्यूडी अधिनियम क्या 1995 है? (What is PWD Act 1995)
11.2 अन्धता/आन्ध रोग/दृष्टिबाधित बालक (Visual Impairment) तथा कम दृष्टि वाले बालक Person With Low Vision
11.3 चलन अक्षमता वाले बालक (Locomotor Disability)
11.4 कुष्ठ रोग मुक्ति (Leprosy Cured)
11.5 श्रवण बाधित (Hearing Impairment)
11.6 मानसिक मंदिता का वर्गीकरण (Classification of Mental Retardation)
11.7 मानसिक बीमारी (Mental Illness)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

12. विकलांग बालकों के लिए राष्ट्रीय न्यास कार्यक्रम–1999 **201-216**
(National Trust Act, 1999 For Disabled Children)

12.1 स्वपरायणता ऑटिज्म कार्यों को बार–बार दोहराने की प्रवृत्ति (Autism Repetation of Work Again and Again)
12.2 प्रमस्तिष्कीय पक्षघात (Cerebral Palsy)
12.3 मानसिक मंदता (Mental Retardation)
12.4 बहु निःशक्तता (Multiple Disability)
12.5 शब्दानुकरण (Echolalia)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

13. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 **217-240**
(Rights of Person With Disability Act–2016)

13.1 आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम 2016 की मुख्य विशेषताएँ (The Salient Features of the Rights of Persons with Disabilities Act–2016)
13.2 दिव्यांग व्यक्तियों संबंधी कानून–दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016
13.3 अंधापन (Blindness)
13.4 कम दृष्टि बालक (Person with Low Vision)
13.5 कुष्ठ रोग मुक्त (Leprosy Cured)
13.6 श्रवण बाधित (बहरे तथा ऊँचा सुनने वाले बालक) [Hearing Impairment (Deaf and Hard of Learing)]
13.7 चलन अक्षमता (Locomotor Disability)
13.8 बौनापन (Dwarfism)
13.9 बौद्धिक विकलांगता (Intellectual Disability)
13.10 मानसिक बीमारी (Mental Illness)
13.11 ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder)
13.12 प्रमस्तिष्कीय घात (Cerebral Palsy)
13.13 पेशीय दुर्विकास (मस्कुलर डिस्ट्रोफी/Muscular Dystrophy)
13.14 जीर्ण तन्त्रिका सम्बन्धी स्थितियाँ (Chronic Neurological Conditions)
13.15 विशिष्ट सीखने की अक्षमता (Specific Learning Disabilities)
13.16 मल्टीपल स्क्लेरोसिस (Multiple Sclerosis)

13.17 स्पीच डिसऑर्डर वाक् शक्ति की समस्या
13.18 थैलेसीमिया (Thalassemia)
13.19 हीमोफीलिया (Haemophilia)
13.20 सिकल–सेल रोग (Sickle Cell Disease)
13.21 बहरापन सहित कई विकलांगता (Multiple Disabilities Including Deaf, Blindness)
13.22 एसिड अटैक पीड़ित (Acid Attack Victine)
13.23 पार्किंसंस रोग (Parkinson's Disease)
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

14. दिव्यांग बालकों की आकलन व मूल्यांकन प्रणाली, सांख्यिकी व दूरस्थ शिक्षा **241-268**
(Evaluation and Assessment for Disabled Children, Statistics and Distance Education)

14.1 मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)
14.2 मूल्यांकन के उद्देश्य (Purposes of Evaluation)
14.3 मूल्यांकन के उपकरण व प्रविधियों का वर्गीकरण (Classification of Tools and Techniques of Evaluation)
14.4 आकलन (Assessment)
14.5 आकलन की विशेषताएँ (Characteristics of Assessment)
14.6 आकलन के क्षेत्र (Scopes of Assessment)
14.7 सांख्यिकी (Statistics)
14.8 केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप (Measures of Central Tendency)
14.9 आलेखीय चित्रण (Graphical Representation)
14.10 दूरस्थ शिक्षा (Distance Education)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

15. दिव्यांग बालकों का निर्देशन तथा परामर्श **269-280**
(Guidance and Counselling of Disabled Children)

15.1 निर्देशन की परिभाषाएँ (Definitions of Guidance)
15.2 निर्देशन की प्रकृति (Nature of Guidance)
15.3 निर्देशन का क्षेत्र (Scope of Guidance)
15.4 परामर्श का अर्थ और परिभाषायें (Meaning and Definitions of Counselling)
15.5 परामर्श की आवश्यकता (Need of Counselling)
15.6 विशिष्ट बच्चों के लिए निर्देशन की आवश्यकता (Need of Guidance for Exceptional Children)
15.7 विभिन्न प्रकार के विशेष बालक (Different Types of Exceptional Children)
15.8 विशिष्ट बालकों का पुनर्वास : सरकार की भूमिका (Rehabilitation of Exceptional Children : Role of Government)
15.9 विकलांग व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र (Vocational Rehabilitation Centres for Handicapped)
15.10 पुनर्वास केन्द्रों के कार्य तथा क्रिया–कलाप (Functions and Activities of Vocational Rehabilitation Centres)
15.11 विकलांगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, 1981 (International Year of Physically Handicapped)
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

16. अन्य महत्वपूर्ण विषय **281-304**
(Other Important Topics)

16.1 उपलब्धि परीक्षण का निर्माण (Construction of Achievement Test)
16.2 उपलब्धि परीक्षणों की विशेषताएँ (Characteristics of Achievement Tests)
16.3 उपलब्धि परीक्षणों का महत्व (Importance of Achievement Tests)
16.4 उपलब्धि परीक्षण के प्रकार (Types of Achievement Test)
16.5 प्रमापीकृत या मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण (Standardized Achievement Test)
16.6 अध्यापक–निर्मित उपलब्धि परीक्षण (Teacher-made Achievement Test)
16.7 उपलब्धि परीक्षण का निर्माण (Construction of Achievement Test)
16.8 दूरस्थ शिक्षा (Distance Education)
16.9 अन्य विकार (Other Disorder)
16.10 MMR टीका MMR
16.11 स्मृति सहायक या स्मरक (निमोनिक्स) (Nimonix)
वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न
व्याख्यात्मक हल

अध्याय 1

शिक्षा-मनोविज्ञान, विशिष्ट शिक्षा, एकीकृत शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा

(Educational-Psychology, Special Education, Integrated Education and Inclusive Education)

शिक्षा एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त निरन्तर चलती रहती है। अतः मनुष्य इस गतिशील प्रक्रिया के माध्यम से कुछ-न-कुछ 'सीखता' रहता है। इससे व्यक्ति अपने जीवन में विकास की चरम सीमा तक पहुँचने की कोशिश करता है। सर्वप्रथम बालक की शिक्षा उसके परिवार से शुरू हो जाती है। माता ही उसकी प्रथम गुरु होती है। इसके बाद वह विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाता है, जहाँ वह शिक्षक के सम्पर्क में आकर शिक्षा ग्रहण करता है। समाज से, समाज के सदस्यों से, मित्रों से व अन्य माध्यमों से व्यक्ति निरन्तर कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है। इस प्रकार शिक्षा समाज में निरन्तर चलने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है।

1.1 शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Education)

शिक्षा क्या है? इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग-अलग विचार व्यक्त किए हैं। कुछ विद्वान शिक्षा के संकुचित अर्थ को स्पष्ट करते हैं और कुछ व्यापक अर्थ को।

I. शिक्षा का शाब्दिक अर्थ (Etymological Meaning of Education)

किसी शब्द की व्युत्पत्ति को जानने के लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक होता है कि वह शब्द किस भाषा से प्रकट हुआ है –जैसे 'शिक्षा' शब्द हिन्दी भाषा का है तथा हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। 'शिक्षा' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों से मानी जाती है। एक है 'शिक्ष्' धातु तथा दूसरा 'शाक्ष्' धातु।

'शिक्ष्' का अर्थ है—'सीखना' अथवा ज्ञान प्राप्त करना अथवा अध्ययन करना।

'शाक्ष्' का अर्थ है—'अनुशासन में रखना', 'नियन्त्रण में रखना' तथा 'निर्देश' देना।

शिक्षा के अनुरूप अथवा समान अर्थ वाला संस्कृत भाषा में एक शब्द और है—'विद्या', जो संस्कृत के 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—'जानना' अथवा 'ज्ञान' प्राप्त करना। जानने में मुख्य रूप से दो बातों को सम्मिलित किया जाता है—(1) परिवेश में या बाहर से आरोपित ज्ञान को जानना, अर्थात् शिक्षक जो ज्ञान बालकों को प्रदान कर रहे हैं, वह उसको जाने तथा उसको समझे। (2) बालक अपने अन्तर्निहित ज्ञान को पहचाने और समझे।

प्राचीन भारतीय दार्शनिकों व ऋषि-मुनियों का यही विचार था कि आत्मज्ञान ही सच्चा ज्ञान है।

'शिक्षा' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'एजूकेशन' (Education) शब्द का पर्याय है। विद्वानों के अनुसार 'Education' शब्द की उत्पत्ति लैटिन (Latin) भाषा के निम्न शब्दों से हुई है–

'एजूकेशन' (Education) शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'एडूकेटम' (Educatum) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—शिक्षित करना। 'एडूकेटम' शब्द 'ए' (E) और 'डूको' (Duco) दो शब्दों से मिलकर बना है। 'ए' (E) का अर्थ है 'अन्दर से' और 'डूको' (Duco) का अर्थ है 'आगे बढ़ना'। लैटिन भाषा के 'एडूकेयर' (Educare) और 'एडूसीयर' (Educere) शब्द भी शिक्षा के इसी अर्थ को प्रकट करते हैं। 'एडूकेयर' (Educare) का अर्थ है 'शिक्षित करना', 'बाहर ले आना' या 'विकसित करना' (to educate, to bring-up or to raise) और 'एडूसीयर' (Educere) का अर्थ है 'विकसित करना', 'बाहर निकालना' (to bring forth, to lead out)। इस प्रकार व्युत्पत्ति के आधार पर शिक्षा का अर्थ बालक की अन्तर्निहित शक्तियों या गुणों को विकसित करके उसका सर्वांगीण विकास करने की क्रिया से है।

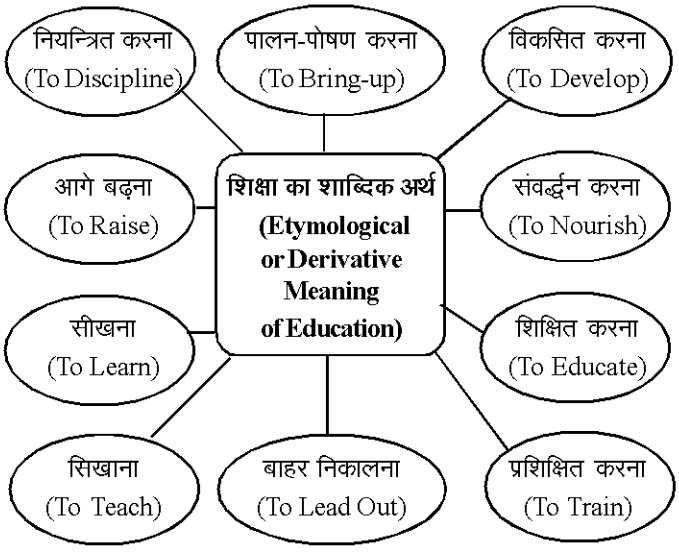

शिक्षा के इस रूप को व्यक्त करती हुई कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

भारतीय विद्वानों के अनुसार

- **महात्मा गाँधी** के शब्दों में, **''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''**

  According to **Mahatma Gandhi**, "By education I mean an all-round drawing out of the best in child and man—body, mind and spirit."

- **स्वामी विवेकानन्द** के शब्दों में, **''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''**

  According to **Swami Vivekananda,** "Education is manifestation of perfection already present in man."

- **रबीन्द्रनाथ टैगोर** के अनुसार, **''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएँ नहीं देती वरन् हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म्य स्थापित करती है।''**

  According to **Tagore,** "The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence."

पश्चिमी विद्वानों के अनुसार

- **अरस्तू** के अनुसार—**''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण ही शिक्षा है।''**

  Accroding to **Aristotle,** "Education is the creation of a sound mind in a sound body."

- **प्लेटो** के अनुसार—**''शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य हैं।''**

  According to **Plato,** "Education consists in giving to the body and soul all the perfection to which they are susceptible."

- **जॉन डीवी** के अनुसार—**''शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने वाली अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।''**

  According to **John Dewey,** "Education is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfil his possibilities."

II. शिक्षा का संकुचित अर्थ (Narrow Meaning of Education)

शिक्षा का सबसे प्रचलित रूप ही उसका संकुचित रूप है। जनसाधारण की यह धारणा होती है कि विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा, जिसमें सब कुछ पूर्वनिर्धारित होता है, वही शिक्षा है। इसमें पाठ्यक्रम पूर्वनिर्धारित होता है, निश्चित शिक्षण विधियाँ होती हैं, पाठ्य-पुस्तकों की निश्चितता और बहुलता होती है और इसमें शिक्षकों का स्थान प्रमुख होता है। यह शिक्षा जीवन के कुछ ही वर्षों तक चलती है। अतः इसे पुस्तकीय ज्ञान एवं विद्यालयी शिक्षा की भी संज्ञा दी जाती है। शिक्षा के संकुचित अर्थ को परिभाषित करते हुए **जी. एच. थॉमसन** ने कहा है—**''शिक्षा एक विशेष प्रकार का वातावरण है, जिसका प्रभाव बालक के चिन्तन, दृष्टिकोण तथा व्यवहार करने की आदतों पर स्थायी रूप से परिवर्तन के लिए डाला जाता है।''**

According to **G. H. Thomson**, "The influence of the environment of the individual with a view to producing a permanent change in his habits of behaviour of thought of attitude."

जे. एस. मैकेन्जी ने शिक्षा के संकुचित अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है, **''संकुचित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय हमारी शक्तियों के विकास और उन्नति के लिए चेतनापूर्वक किये गये प्रयासों से लिया जाता है।''**

According to **J. S. Mackenzi,** "In narrow sense education may be taken to mean any consciously directed effort to develop and cultivate our power."

संकुचित अर्थ में शिक्षा बालक के सम्पूर्ण विकास को करने में असफल या असमर्थ होती है। इस शिक्षा का उद्देश्य निश्चित समय व निश्चित स्थान पर चलने वाली शैक्षिक प्रक्रिया से है। इसके द्वारा एक निश्चित पद्धति के अन्तर्गत योग्य व सभ्य नागरिकों का निर्माण किया जाता है जो अपने व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ राष्ट्र का विकास भी करते हैं। परन्तु इस प्रकार की व्यवस्था से बालक में व्यावहारिक ज्ञान का अभाव रहता है। वह विषय को रटकर याद तो कर लेता है, परन्तु उसमें व्यावहारिक कुशलता नहीं आ पाती है। ज्ञान उसके पास मात्र सूचना बनकर ही रह जाता है। अतः इसे अध्यापन या 'निर्देशन' (Instruction) कहा जाना अधिक उपयुक्त है।

III. शिक्षा का व्यापक अर्थ (Wider Meaning of Education)

व्यापक अर्थ में शिक्षा से तात्पर्य है—जो हम सीखते या अर्जित करते हैं। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कुछ-न-कुछ सीखता रहता है अर्थात् शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। ऐसी शिक्षा किसी विशेष व्यक्ति, समय, स्थान अथवा देश तक सीमित नहीं रहती, अपितु जिसके भी सम्पर्क में आकर बालक जो कुछ भी सीखता है वह शिक्षा के अन्तर्गत आता है। बालक जब जन्म लेता है तो वह असहाय शिशु होता है, उसी अवस्था से ही उसकी सीखने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। उसकी प्रथम सीख उसकी माँ की गोद से ही प्रारम्भ हो जाती है। धीरे-धीरे वह अपने परिवेश व वातावरण की वस्तुओं, व्यक्तियों आदि से सीखता है। व्यक्ति सजीव, निर्जीव, जीव-जन्तु, पौधे, पुष्प आदि सभी से कुछ-न-कुछ सीखता है तथा यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती है। व्यापक अर्थ में शिक्षा को किसी समय, स्थान, व्यक्ति विशेष या पाठ्यक्रम से नहीं बाँधा जा सकता है, बल्कि यह मुक्त प्रक्रिया के रूप में है। कुछ शिक्षाशास्त्री यह मानते हैं कि जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। (Life is education and education is life in itself.) बालक जिन व्यक्तियों व वस्तुओं के सम्पर्क में आता है, वह ही उनके शिक्षक हैं। उसके जीवनभर के सम्पूर्ण अनुभव जो उसे सिखाते हैं, वह भी शिक्षा ही है।

अनेक विद्वानों ने शिक्षा के इस रूप को भी परिभाषित करते हुए अपने विचार दिये हैं—

जे. एस. मैकेन्जी के अनुसार—**''व्यापक दृष्टि से शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव के द्वारा इसका विकास होता है।''**

According to **J. S. Mackenzi,** "In wider sense, it is a process that goes on throughout life and that is promoted by almost every experience in life."

1.2 शिक्षा की प्रकृति (Nature of Education)

शिक्षा का स्वरूप या प्रकृति क्या है ? शिक्षा विज्ञान है या कला ? शिक्षा से सम्बन्धित इन समस्याओं पर पर्याप्त समय से वाद-विवाद चला आ रहा है। इसके वास्तविक स्वरूप को देखना ही यहाँ हमारा ध्येय है। इसकी प्रकृति के निर्धारण से पूर्व **विज्ञान** और **कला** क्या है, देखना आवश्यक है।

I. विज्ञान क्या है ? (What is Science ?)

विज्ञान ज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है। इसकी कसौटी अभिवृत्ति या उपागम है न कि विषय-वस्तु। **कार्ल पीयरसन** (Karl Pearson) के

अनुसार सभी विज्ञानों की एकता उनमें विधिशास्त्र में निहित होती है न कि विषय-वस्तु में। विज्ञान की प्रमुख विशेषतायें हैं—तथ्यात्मकता (Factuality), सार्वभौमिकता (Universality), उसके नियमों की प्रामाणिकता, कार्य-कारण सम्बन्धों की खोज तथा नियमों पर आधारित भविष्यवाणी करना आदि। विज्ञान सत्यों की एक व्यवस्था है जिसमें सत्य की सत्य के लिये एक विशिष्ट भाषा तथा पदावली में खोज की जाती है। विज्ञान को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—सैद्धान्तिक (Theoretical) तथा व्यावहारिक (Applied)। सैद्धान्तिक विज्ञानों में सत्य के लिये सत्य की खोज की जाती है। इनमें उनके व्यावहारिक रूप की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। व्यावहारिक विज्ञानों में मानव जीवन के वैज्ञानिक सिद्धान्तों की व्यावहारिकता पर बल दिया जाता है।

II. कला क्या है ? (What is Art ?)

कला ज्ञान (Knowledge) में नहीं वरन् कौशल में होती है। कला की कसौटी कलाकार का कौशल होता है। यह व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाती है। कला का लक्ष्य करना है न कि जानना। कला में ज्ञान के साथ कौशल तथा अभ्यास शामिल हैं। अभ्यास तथा पुनरावृत्ति के बिना कला को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षा को न तो विज्ञान की श्रेणी में रख सकते हैं, न ही कला की श्रेणी में। यह विज्ञान एवं कला दोनों है। इसके लिये उपयुक्त शब्दावली 'शिक्षा की कला' (Art of education) तथा शिक्षा विज्ञान (Science of education) प्रयुक्त कर सकते हैं। शिक्षा विज्ञान (Educational Science) न तो पूर्णतः सैद्धान्तिक है और न ही व्यावहारिक। इसमें सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों पक्ष देखने को मिलते हैं। वस्तुतः यह व्यावहारिक पहलू अधिक रखता है। अतः विज्ञान की श्रेणी में इसका स्थान सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक (Applied) विज्ञान दोनों के रूप में है।

1.3 शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Education)

शिक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

विशेषताएँ
- शिक्षा विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा बालक के मनोविज्ञान पर आधारित है।
- शिक्षा वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों है।
- शिक्षा का सर्वांगीण विकास—शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक।
- शिक्षा सतत् प्रक्रिया है।

1.4 शिक्षा की प्रक्रिया (Process of Education)

शिक्षा की प्रक्रिया को विभिन्न शिक्षाविदों ने विभिन्न रूप से प्रस्तुत किया है—

I. शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया के रूप में (Education as a Bipolar Process)

शिक्षाशास्त्रियों का विचार है कि शिक्षा की प्रक्रिया में एक पक्ष प्रभावितकर्त्ता तथा दूसरा पक्ष प्रभावित होता है। अतः शिक्षा द्विपक्षीय प्रक्रिया है अर्थात् शिक्षा के दो पक्ष होते हैं—प्रथम, जो प्रभावित करता रहता है (शिक्षक) और द्वितीय, वह जो प्रभावित होता है (शिक्षार्थी)। प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षाशास्त्री **जॉन एडम्स** ने इस सम्बन्ध में कहा है—**''शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन हो सके।''**

"Education is a bi-polar process in which one personality acts upon another in order to modify the development of the other."

एडम्स ने यह भी कहा—''यह प्रक्रिया केवल सचेतन ही नहीं, बल्कि सोद्देश्य अथवा विचारपूर्ण भी है। इसमें शिक्षक का एक स्पष्ट प्रयोजन भी होता है और यह उसी के अनुसार बालक के व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

आगे दिये गये रेखाचित्र के आधार पर एडम्स के कथन को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि शिक्षा के दो ध्रुव हैं—शिक्षक व शिक्षार्थी। दोनों के सम्मिलित व सक्रिय सहयोग से ही शिक्षा की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया में बालक और शिक्षक का समान महत्त्व है। शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के मध्य आदान-प्रदान की प्रक्रिया चलती रहती है। एक मार्ग-प्रदर्शक तथा दूसरा उसका अनुकरणकर्त्ता होता है। शिक्षक अपने जीवन के आदर्शों, व्यक्तित्व व ज्ञान के माध्यम से बालक के व्यवहार को सुगठित और विकसित करता है।

शैक्षिक प्रक्रिया (Educational Process)

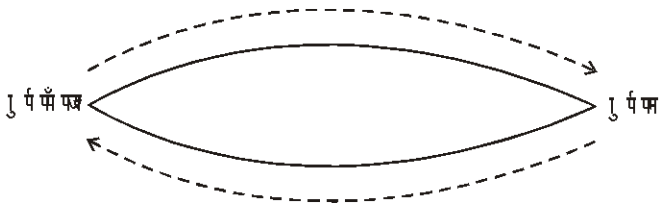

अतः यह प्रक्रिया शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के सम्मिलित सहयोग से चलने वाली प्रक्रिया है।

II. शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया के रूप में (Education as a Tripolar Process)

जॉन डीवी ने एडम्स द्वारा प्रतिपादित द्विमुखी प्रक्रिया का खण्डन किया है। डीवी का विचार है कि शिक्षा की द्विमुखी प्रक्रिया में शिक्षक एवं बालक को ही महत्त्व प्रदान किया गया है, जबकि इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रम भी महत्त्वपूर्ण है। डीवी का विचार है कि शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक और छात्रों के बीच अन्तःक्रिया का कोई-न-कोई आधार अवश्य होता है और वह आधार समाज है, क्योंकि बालक का विकास समाज में रहकर ही होता है। समाज द्वारा ही बदलती परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण विधियों को निर्धारित किया जाता है। डीवी ने बताया कि शिक्षा की प्रक्रिया के दो रूप हैं—मनोवैज्ञानिक और सामाजिक। शिक्षा के द्वारा निःसन्देह बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाना चाहिए, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बालक का विकास समाज में रहकर ही सम्भव होता है। अतः उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया के तीन आधारभूत स्तम्भ बताये हैं—

(i) शिक्षक, (ii) बालक, (iii) पाठ्यक्रम।

III. शिक्षा एक बहुमुखी प्रक्रिया के रूप में (Education as a Multipolar Process)

आधुनिक समय में शिक्षा का स्वरूप काफी बदला हुआ है। अब शिक्षा को केवल विद्यालय और पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलापों का भी शैक्षिक महत्त्व है। विद्यालय के अतिरिक्त अन्य औपचारिक तथा निरौपचारिक साधनों को भी शिक्षा का साधन माना जाता है। शिक्षा को बहुमुखी प्रक्रिया के रूप में मान्यता प्रदान की जा रही है। शिक्षार्थियों को उनकी रुचि के आधार पर साधनों के चयन की स्वतन्त्रता प्रदान की जा रही है। इसमें शिक्षा का प्रचलित स्वरूप, पूर्णकालिक शिक्षा, अंशकालिक शिक्षा, पत्राचार द्वारा शिक्षा एवं सूचना के स्रोतों का उपयोग करने वाले स्वशिक्षा के अनेक रूप भी सम्मिलित हैं। स्वअध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार की नई संस्थाओं और सेवाओं, जैसे—सूचना केन्द्र, भाषा प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, तकनीकी प्रशिक्षण प्रयोगशालाएँ एवं अधिगम केन्द्र, मुक्त विश्वविद्यालय तथा श्रव्य-दृश्य साधन आदि के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है।

1.5 शिक्षा के प्रकार (Types of Education)

शिक्षा को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभक्त किया गया है–

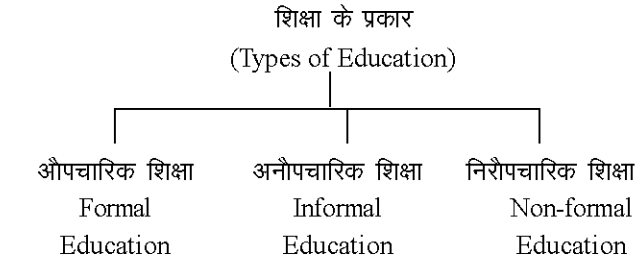

शिक्षा के प्रकार निम्नलिखित हैं –

I. औपचारिक शिक्षा (Formal Education)

औपचारिक शिक्षा, शिक्षा का सबसे प्रचलित रूप है। औपचारिक शिक्षा को नियमित और साविधिक शिक्षा भी कहा जाता है। विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा औपचारिक शिक्षा है। इस शिक्षा व्यवस्था में उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, स्थान, समय आदि सब कुछ निश्चित होता है तथा परीक्षा लेने और प्रमाण-पत्र देने की व्यवस्था होती है। इस प्रकार की शिक्षा द्वारा व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल का विकास होता है। यह उसे आचरणयुक्त और चरित्रवान बनाती है और उसे अपनी आजीविका चलाने में भी सहायता करती है। इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करती है। व्यावसायिक या उद्योगों के लिए प्रशिक्षित पेशेवर भी इसी शिक्षा द्वारा प्राप्त होते हैं। विद्यालयों के अतिरिक्त पुस्तकालय, संग्रहालय और पुस्तकें आदि भी औपचारिक शिक्षा के साधन हैं।

औपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Formal Education)

औपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) औपचारिक शिक्षा योजनाबद्ध और व्यवस्थित ढंग से प्रदान की जाती है।

(ii) औपचारिक शिक्षा कठोर तथा जीवन के वास्तविक अनुभवों से भिन्न होती है।

(iii) औपचारिक शिक्षा मुख्य रूप से शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रदान की जाती है।

(iv) औपचारिक शिक्षा में लक्ष्य पूर्वनिर्धारित होते हैं। पाठ्यक्रम निश्चित अवधि तथा निश्चित स्थान के लिए होता है।

(v) औपचारिक शिक्षा में परीक्षा उत्तीर्ण करना ही सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

(vi) इस शिक्षा को ग्रहण करने के लिए बालक को शिक्षा संस्था में प्रवेश लेना अनिवार्य होता है।

II. अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education)

अनौपचारिक शिक्षा जीवनपर्यन्त चलती है। इसे अनियमित, आकस्मिक और अविधिक शिक्षा भी कहा जाता है। अनौपचारिक शिक्षा वह होती है जो अनायास, आकस्मिक और स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है। यह शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार और आचरण में सुधार करके उसको भावी जीवन के लिए तैयार करती है। यह शिक्षा औपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा के साथ भी चलती रहती है। इस शिक्षा में कुछ भी पूर्व–नियोजित नहीं होता है। बालक इसे परिवार के सदस्यों, आस-पड़ोस, खेल के मैदान, पार्क आदि सार्वजनिक स्थानों पर उठते-बैठते, खेलते-कूदते, बातचीत करके भी प्राप्त कर सकता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अनौपचारिक शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक महत्त्व है, क्योंकि जन्म के बाद पहले पाँच वर्षों में बच्चे की शिक्षा का प्रारूप प्रायः अनौपचारिक ही होता है। भाषा–सभ्यता, आचरण और संस्कृति के ज्ञान की प्रदाता भी अनौपचारिक शिक्षा ही होती है।

अनौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Informal Education)

अनौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) अनौपचारिक शिक्षा में कुछ भी निश्चित एवं पूर्व–निर्धारित नहीं होता है।

(ii) अनौपचारिक शिक्षा सरल, स्वाभाविक और जीवन से सम्बन्धित होती है।

(iii) अनौपचारिक शिक्षा व्यक्ति को कहीं भी किसी से भी प्राप्त हो सकती है।

(iv) अनौपचारिक शिक्षा में किसी भी प्रकार के मूल्यांकन की आवश्यकता नहीं होती है।

(v) अनौपचारिक शिक्षा जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

(vi अनौपचारिक शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।

III. निरौपचारिक शिक्षा (Non- formal Education)

निरौपचारिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा व अनौपचारिक शिक्षा के बीच का मार्ग कहा जाता है। निरौपचारिक शिक्षा में उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ प्रायः निश्चित होते हैं, परन्तु वे औपचारिक शिक्षा के समान कठोर नहीं होते हैं। निरौपचारिक शिक्षा में नियंत्रण के साथ अनियंत्रण होता है। विद्यार्थी कई क्षेत्रों में पूर्ण रूप से नियंत्रित होते हैं तथा कई क्षेत्रों में पूर्ण रूप से अनियंत्रित होते हैं। निरौपचारिक शिक्षा बहुत लचीली होती है। इसके उद्देश्य सामान्य शिक्षा का प्रसार और शिक्षण विधियाँ सीखने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निश्चित किये जाते हैं। देश में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था के लिए

औपचारिक शिक्षा के समान्तर चलाई जाने वाली शिक्षा को निरौपचारिक शिक्षा कहते हैं। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि भी इसी के अन्तर्गत आती हैं।

निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Informal Education)

निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) निरौपचारिक शिक्षा लचीली होती है।

(ii) निरौपचारिक शिक्षा में उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ निश्चित होती हैं।

IV. प्रत्यय व अप्रत्यक्ष शिक्षा (Direct and Indirect Education)

(i) प्रत्यक्ष शिक्षा (Direct Education)—इस शिक्षा को 'वैयक्तिक शिक्षा' (Personal Education) भी कहा जाता है। यह शिक्षा, अध्यापक और छात्रा के बीच होती रहती है। अध्यापक अपने ज्ञान, आदर्शों और उद्देश्यों से छात्रा के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

(ii) अप्रत्यक्ष शिक्षा (Indirect Education)—इस शिक्षा को 'अवैयक्तिक शिक्षा' (Impersonal Education) भी कहा जाता है। जब छात्रा पर अध्यापक के उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता है, तब वह विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष साधनों को अपनाकर छात्रा के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

हम 'प्रत्यक्ष' और 'अप्रत्यक्ष' विधियों के अन्तर को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मान लीजिए, शिक्षक—बालकों में समय-तत्परता और नियमबद्धता की आदतों का विकास करना चाहता है। वह इस कार्य को दो प्रकार से कर सकता है—

- वह समय-तत्परता और नियमबद्धता पर उपदेश दे सकता है।
- वह अपने कार्यों में समय-तत्पर और नियमबद्ध हो सकता है।

इन दोनों विधियों में पहली 'प्रत्यक्ष' और दूसरी 'अप्रत्यक्ष' है। इनमें दूसरी विधि पहली से अच्छी है, क्योंकि उदाहरण—उपदेश से अच्छा होता है। उदाहरण का प्रभाव स्थायी होता है, जबकि उपदेश का प्रभाव क्षणिक होता है।

V. वैयक्तिक व सामूहिक शिक्षा (Individual and Collective Education)

(i) वैयक्तिक शिक्षा (Individual Education)—वैयक्तिक शिक्षा का सम्बन्ध केवल एक बालक से होता है। यह शिक्षा उसको व्यक्तिगत रूप से और अकेले दी जाती है। शिक्षा देते समय उसकी रुचि, प्रकृति, योग्यता और व्यक्तिगत विभिन्नता का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। शिक्षा देते समय इन बातों के अनुकूल ही शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक समय में वैयक्तिक शिक्षा पर बहुत बल दिया जा रहा है। परिणामतः अनेक वैयक्तिक शिक्षण विधियों की खोज की गयी है।

(ii) सामूहिक शिक्षा (Collective Education)—सामूहिक शिक्षा का सम्बन्ध एक बालक से न होकर, बालकों के समूह से होता है। बहुत-से बालकों के एक समूह को, एक कक्षा में एक साथ शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षा में बालकों की व्यक्तिगत रुचियों, प्रवृत्तियों, योग्यताओं और विभिन्नताओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। आजकल सभी देशों के, सभी प्रकार के स्कूलों में शिक्षा का यही स्वरूप प्रचलित है।

VI. सामान्य व विशिष्ट शिक्षा (General and Specific Education)

(i) सामान्य शिक्षा (General Education)—इस शिक्षा को उदार शिक्षा (Liberal Education) भी कहते हैं। आजकल के भारतीय हाई और हायर सेकेण्डरी स्कूलों में इसी प्रकार की शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षा का कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता। यह बालकों को केवल सामान्य जीवन के लिए तैयार करती है। इसका उद्देश्य केवल उनकी सामान्य बुद्धि को तीव्र करना है। यह उनको किसी विशेष व्यवसाय के लिए तैयार नहीं करती है।

(ii) विशिष्ट शिक्षा (Specific Education)—यह शिक्षा किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर दी जाती है। इसका उद्देश्य बालकों को किसी विशेष व्यवसाय या निश्चित कार्य के लिए तैयार करना होता है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद बालक, जीवन के एक विशेष या निश्चित क्षेत्र में कार्य करने के लिए कुशल समझा जाने लगता है। बालक को इंजीनियर, डॉक्टर, वकील या एकाउण्टेण्ट बनाना विशिष्ट शिक्षा के उदाहरण हैं।

औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा निरौपचारिक शिक्षा में अन्तर
(Difference Among the Formal Education, Informal Education and Non-formal Education)

इन तीनों प्रकार की शिक्षा को निम्न तालिका द्वारा और अधिक स्पष्ट किया जा रहा है—

औपचारिक शिक्षा	अनौपचारिक शिक्षा	निरौपचारिक शिक्षा
1. निश्चित स्थान	1. इसमें औपचारिक शिक्षा जैसी औपचारिकताओं की पाबन्दी नहीं।	1. यह छात्रा तक शिक्षा पहुँचाने का एक प्रयास है।
2. निश्चित समय	2. जन्म से मृत्युपर्यन्त तक क्षण-प्रतिक्षण होने वाले अनुभव इसकी सामग्री है।	2. यह शिक्षा सभी प्रकार के छात्रों के लिए है। अतः इसमें प्रवेश का लचीला एवं बहुआयामी आधार होता है।
3. निश्चित पाठ्यक्रम	3. जिन वस्तुओं से अनुभव लिये जाते हैं, वे शिक्षक और जो अनुभव लेते हैं, वे छात्रा होते हैं।	3. यह लचीली है।
4. निश्चित शिक्षक	4. यह मुक्त शिक्षा है। इसमें विद्यालय जैसे प्रतिबन्ध, शिक्षण विधि, परीक्षा, पाठ्यक्रम, समय तालिका, स्थान आदि नहीं है।	4. यह उद्देश्यपूर्ण है।
5. निश्चित उद्देश्य	5. यह विद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व की पर्यावरणीय पारिवारिक शिक्षा भी है। यही विद्यालयी शिक्षा का आधार है।	5. यह जीवन से सम्बन्धित है।
6. निश्चित कार्यक्रम	6. इसका कोई कार्यक्रम नहीं है। यह हर समय तथा प्रत्येक स्थान पर प्राप्त होती रहती है।	6. यह कार्य से जुड़ी है।

1.6 मनोविज्ञान का अर्थ, परिभाषाएँ, प्रकृति, क्षेत्र तथा शाखाएँ
(Meaning, Definitions, Nature, Scope and Branches of Psychology)

मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी का शब्द 'साइकोलॉजी' का हिन्दी रूपान्तर है, जो ग्रीक भाषा के दो शब्दों—साइकी (Psyche) तथा लोगोस (Logos) से मिलकर बना है। लोगोस का अर्थ होता है विचार करना, अध्ययन करना आदि तथा साइकी (Psyche) का अर्थ भिन्न-भिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न रूप से, जैसे आत्मा, मन आदि के रूप में लगाया जाता रहा है और इसी के फलस्वरूप मनोविज्ञान के अर्थ एवं परिभाषाओं में भी बदलाव आता रहा है। प्रमुख रूप से मनोविज्ञान की परिभाषाओं में आने वाले परिवर्तन की निम्नलिखित चार अवस्थाएँ चिह्नित की जा सकती हैं—

I. **प्रथम अवस्था (First Stage)—(आत्मा का विज्ञान–Science of Soul)**—16वीं शताब्दी में यूनानी दार्शनिकों ने इसे 'आत्मा का अध्ययन करने वाला विज्ञान' माना। इन दार्शनिकों में प्लेटो, अरस्तु तथा डैकार्टे का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किन्तु ये दार्शनिक यह स्पष्ट करने में सफल नहीं हो सके कि आत्मा क्या है ? उसका स्वरूप क्या है? इससे लोगों को आत्मा के स्वरूप पर ही संदेह होने लगा। आत्मा को भौतिक पदार्थ से भिन्न बताया गया। आत्मा को न देखा जा सकता है, न छुआ जा सकता है, इसलिए इसके अस्तित्व को प्रयोग द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता। अतः यह दर्शन का विषय है विज्ञान का नहीं। शरीर के अस्तित्व की भाँति आत्मा के अस्तित्व का कोई यथार्थ प्रमाण नहीं है। आत्मा की स्थिति की समस्या को निरीक्षण तथा प्रयोग द्वारा हल नहीं किया जा सकता है और न ही उसका अध्ययन किया जा सकता है। मनोविज्ञान को विज्ञान के स्तर पर लाने के लिए वैज्ञानिक पद्धति के अन्तर्गत लाना आवश्यक है। अब मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान के किसी दूसरे अर्थ और परिभाषा की खोज में लग गए।

II. **द्वितीय अवस्था (Second Stage)—(मन का विज्ञान–Science of Mind)**—17वीं शताब्दी में साइकी (Psyche) का अर्थ मन (Mind) से लगाया गया और फलस्वरूप मनोविज्ञान को मन का अध्ययन करने वाला विषय या विज्ञान कहा जाने लगा। यह अर्थ मनोविज्ञान के साथ काफी समय तक जुड़ा रहा। परन्तु कालान्तर में इस परिभाषा को उसी तरह से आपत्तियों और आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा जैसा कि प्रथम परिभाषा, 'आत्मा का अध्ययन करने वाला विषय' के साथ हुआ था। इसके अस्तित्व तथा स्वरूप के बारे में आत्मा की तरह प्रश्नचिह्न लगाए गए और फलस्वरूप फिर दोबारा किसी नई परिभाषा की खोज आरम्भ हुई।

III. **तृतीय अवस्था (Third Stage)—(चेतना का विज्ञान–Science of Conciousness)**—18वीं शताब्दी के अन्त में विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा। इसमें प्रमुख रूप से विलियम जेम्स, वुण्ट तथा जेन्स सली आदि का नाम लिया जा सकता है। सन् 1892 में **विलियम जेम्स** ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा—"मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा यह हो सकती है कि यह चेतना की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन और व्याख्या करता है।" इनके अनुसार मनोविज्ञान मनुष्य की चेतन क्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान है। इस परिभाषा पर भी विद्वान् एकमत नहीं हो सके और इसके विरुद्ध भी आपत्ति उठाई गई और इस परिभाषा को अपूर्ण कहा गया तथा निम्नांकित तर्क प्रस्तुत किए गए—

चेतना का क्या अर्थ है ? 'चेतन' शब्द से हमें अपनी वर्तमान जागरूक स्थिति का बोध होता है जो मानसिक प्रक्रिया वर्तमान क्षण में अनुभव नहीं की जाती, वह 'चेतन' के अन्तर्गत नहीं आती। मनोविज्ञान सभी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। इसका सम्बन्ध चेतना के विभिन्न स्तरों से है। वियना के विख्यात चिकित्सक **सिगमण्ड फ्रायड** के अनुसार मन के तीन स्तर होते हैं—

(i) चेतन (Concious)
(ii) अर्द्ध-चेतन (Sub-concious)
(iii) अवचेतन (Unconcious)

मनोविज्ञान में केवल चेतन अनुभूतियों का ही अध्ययन नहीं किया जाता, वरन् अर्द्धचेतन व अचेतन मन की प्रक्रियाओं का भी अध्ययन होता है। मनोविज्ञान अर्द्धचेतन और चेतन स्तर को अपने क्षेत्र से नहीं निकाल सकता। चेतन प्रक्रियायें 'मन' का केवल एक अंश है। 'मन' का अधिकांश भाग अर्द्धचेतन या अचेतन होता है। यदि मनोविज्ञान को केवल चेतना का विज्ञान कहा जाए तो 'मन' का अधिकांश भाग मनोविज्ञान के अन्तर्गत नहीं आ पाएगा। इस परिभाषा में एक आपत्ति यह है कि हम अपने चेतन अनुभवों को ही बड़ी कठिनाई से जान पाते हैं। इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि दूसरों की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन बिना 'व्यवहार' का निरीक्षण किए हुए हम नहीं कर सकते।

इस परिभाषा की आलोचना का एक बड़ा कारण चेतन व्यवहार के अध्ययन में काम लाई जाने वाली अन्तःदर्शन विधि को लेकर आरम्भ हुआ। अपने अन्दर झांक कर अपने ही अनुभवों तथा चेतन व्यवहार का अध्ययन करना न तो ठीक प्रकार से संभव हो सकता है और न इसे किसी भी तरह वस्तुनिष्ठ, वैध तथा विश्वसनीय ही बनाया जा सकता है। अपने व्यक्तिगत अनुभवों का कोई किसी भी तरह वर्णन या व्याख्या कर सकता है, वह अपने दोषों को छिपाकर गुणों को ही सामने ला सकता है और इस तरह व्यवहार का चेतन अवस्था में किया जाने वाला सीमित अध्ययन भी अध्ययन की विधि की अवैज्ञानिकता के कारण बिल्कुल अर्थहीन-सा ही हो जाता है।

इस तरह की अनेक न्यूनताओं के कारण मनोविज्ञान की इस तीसरी परिभाषा को भी त्यागकर किसी अन्य परिभाषा की खोज में तत्कालीन मनोवैज्ञानिक जुट गए।

IV. **चतुर्थ अवस्था (Fourth Stage)—व्यवहार का विज्ञान (Science of Behaviour)**— 19वीं शताब्दी में विज्ञान ने तेजी से प्रगति की। विज्ञान का प्रभाव जनमानस और उसके क्रियाकलापों पर स्पष्ट रूप से पड़ना प्रारम्भ हो गया और फलस्वरूप मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित किए जाने के प्रयत्न प्रारम्भ हो गए।

इस दिशा में पहला प्रयत्न प्रसिद्ध अंग्रेज मनोवैज्ञानिक विलियम मैक्डूगल ने किया। **मैक्डूगल** ने सन् 1905 में लिखा—''मनोविज्ञान की सबसे अच्छी और विस्तृत परिभाषा उसे सजीव प्राणियों के आचरण के सकारात्मक विज्ञान के रूप में समझने के द्वारा दी जा सकती है।'' आगे चलकर सन् 1908 में मैक्डूगल ने अपनी एक प्रकाशित पुस्तक 'Introduction to Social Psychology' में व्यवहार शब्द का उल्लेख कर इस परिभाषा को कुछ और परिमार्जित किया। इसके बाद सन् 1949 में मैक्डूगल ने मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यवहार को नियंत्रित करना और उसे अच्छी तरह समझने में सहायता करना बताया।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक **प्रो. वाटसन** ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' कहा। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने चेतन अनुभव की बहुत आलोचना की है। उनका विचार है कि चेतन अनुभवों या अनुभूतियों का वस्तुनिष्ठ निरीक्षण नहीं हो सकता है। इसके स्थान पर उन्होंने मनुष्य के बाह्य व्यवहार के अध्ययन पर बल दिया। व्यवहारवादियों के अनुसार मनोविज्ञान की विषय वस्तु वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए अर्थात् जिसे देखा व सुना जा सके। व्यवहार को देखा, अनुभूत किया तथा परखा जा सकता है। व्यवहार को प्रयोग का विषय भी बनाया जा सकता है। व्यवहार में वस्तुनिष्ठता होती है, अतः मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा जा सकता है।

वाटसन की परिभाषा में व्यवहार शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में किया गया है। आज मनोविज्ञान के अध्ययन के अन्तर्गत न केवल बाह्य व्यवहार आता है, वरन् उसमें आन्तरिक अनुभूतियाँ भी सम्मिलित होती हैं। व्यवहार का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता है जब तक कि उसकी अनुभूति द्वारा व्याख्या न की जाए। व्यवहार की व्याख्या जब अनुभूति के माध्यम से की जाती है तभी उसका अर्थ स्पष्ट होता है। दूसरी बात व्यवहार के सम्बन्ध में यह भी कही जा सकती है कि कभी-कभी विभिन्न मानसिक अवस्थाओं में एक ही प्रकार का व्यवहार दिखाई देता है। अतः केवल बाह्य व्यवहार से ही सही बात का पता नहीं लग पाता। जैसे दुःख में भी आँसू निकलता है और अधिक खुशी में भी। अतः किसी के व्यवहार को देख कर उसकी मानसिक दशा का पता नहीं लगाया जा सकता। विभिन्न अवस्थाओं में व्यवहार एक-सा होते हुए भी अनुभूतियाँ भिन्न हो सकती हैं। व्यवहार को अनुभूति के माध्यम से ही समझा जा सकता है। अतः मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि सही अध्ययन के लिए अनुभूति और व्यवहार, दोनों का अध्ययन आवश्यक है। इस प्रकार मनोविज्ञान केवल व्यवहार का विज्ञान न होकर, यह 'व्यवहार और अनुभूति का विज्ञान' है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ (Definitions of Psychology)

- **गैरीसन** व **अन्य** के अनुसार—"मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष मानव-व्यवहार से है।"

  "Psychology is concerned with observable human behaviour." —**Garison** and **Others**

- **स्किनर** के अनुसार—"मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।"

  "Psychology is the science of behaviour and experience." —**Skinner**

- **मन** के अनुसार—"आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध, व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से है।"

  "Psychology today concerns itself with the Scientific investigation of behaviour." —**Munn**

- **आर. एस. वुडवर्थ** के अनुसार—"मनोविज्ञान व्यक्ति के अपने परिवेश के साथ किए जाने वाले कार्यों का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

  "Psychology is the scientific study of the activities of the individual in relation to the environment." —**R.S. Woodworth**

- **बोरिंग, लैंगफेल्ड** और **वेल्ड** के अनुसार—"मानव स्वभाव का अध्ययन ही मनोविज्ञान है।"

  "Psychology is the study of human nature." —**Boring, Langfeld** and **Weld**

- **क्रो** एवं **क्रो** के अनुसार—"मनोविज्ञान मानव-व्यवहार और मानव-सम्बन्धों का अध्ययन है।"

  "Psychology is the study of human behaviour and human relationships." —**Crow** and **Crow**

- **जेम्स** के अनुसार—"मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना के वर्णन और व्याख्या के रूप में की जा सकती है।"

  "The definition of psychology may be best given as the description and explanation of conciousness as such." —**James**

- **हिलगार्ड, एट्किंसन** तथा **एटकिंसन** के अनुसार—"मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक प्रक्रिया का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।"

  "Psychology is the science that studies behaviour and mental process." —**Hilgard, Atkinson** and **Atkinson**

- **पिल्सबरी** के अनुसार—"मनोविज्ञान की सर्वाधिक सुस्पष्ट परिभाषा 'मानव व्यवहार का विज्ञान' दी जा सकती है।"

  "Psychology may to be most statisfactorily defined as the science of human behaviour." —**Pilsbury**

1.7 मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Psychology)

मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में सर्वमान्य रूप से मान्यता प्राप्त हो चुकी है। मनोविज्ञान को विज्ञान के रूप में मान्यता उसकी प्रकृति के कारण प्राप्त हुई है जिसे संक्षेप में निम्नवत् लिपिबद्ध किया जा सकता है—

(i) विज्ञान की भाँति इसकी अध्ययन सामग्री पूर्णरूपेण क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित होती है।

(ii) विज्ञान की तरह इसमें भी सत्य की खोज की जाती है। मनोविज्ञान में व्यवहार सम्बन्धी तथ्यों का अध्ययन होता है तथा उनसे सम्बन्धित नियमों एवं सिद्धान्तों की विवेचना होती है। इस तरह विज्ञान की भाँति यह भी सदैव सत्य की खोज के लिए तत्पर रहता है।

(iii) क्रमबद्ध तथा सुनियोजित ढंग से छानबीन करना और काम करने की वैज्ञानिक विधियाँ अपनाई जाती हैं। इसमें भी अवलोकन, परीक्षण तथा प्रयोग का स्वरूप विज्ञानमय होता है।

(iv) अन्य वैज्ञानिक विषयों की तरह मनोविज्ञान भी सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक दोनों पक्षों को ही अपने में स्थान देता है। सिद्धान्तों को व्यावहारिक जीवन में उपयोग किए जाने का कार्य मनोविज्ञान भी वैसे ही करता है जैसे भौतिक, रसायन तथा जीव विज्ञान करते हैं।

1.8 मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Psychology)

मनोविज्ञान उन जीवविज्ञानों में से एक है जिनमें जीव के किसी-न-किसी पक्ष का अध्ययन करते हैं। मनोविज्ञान के अन्तर्गत वातावरण में किसी-न-किसी प्राणी के व्यवहार और अनुभूतियों का अध्ययन होता है तथा उसे समझने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान का क्षेत्र उतना ही विस्तृत है जितना जीवन का क्षेत्र है।

मनोविज्ञान बालक, किशोर, प्रौढ़, सामान्य और असामान्य व्यक्तियों का, मनुष्यों और पशुओं का तुलनात्मक अध्ययन करता है। मनुष्य केवल जैविकीय प्राणी नहीं अपितु सामाजिक प्राणी भी है इसलिए उसका व्यवहार समाज के अन्य सदस्यों द्वारा प्रभावित होता है। चूँकि इस प्रक्रिया में प्राणी अनेक प्रकार की क्रियायें करता है, ये क्रियायें मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की होती हैं जिन्हें अनुभूति और व्यवहार कहा जाता है। संवेदन, प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, तर्क, अवधान, रुचि, स्मरण- विस्मरण, संवेग, कल्पना आदि सभी प्रकार की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन मनोविज्ञान के अन्तर्गत होता है। अतः कहा जा सकता कि मनोविज्ञान वातावरण से उत्पन्न प्राणी के व्यवहार का अध्ययन करता है। मानव को अपने जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन सभी परिस्थितियों में उसका व्यवहार भिन्न-भिन्न प्रकार का हो सकता है। अतः मनोविज्ञान की बहुत-सी शाखाएँ हो जाती हैं। मनोविज्ञान का क्षेत्र इन शाखाओं के विषय-क्षेत्र से मिलकर बना है जिनमें मानव व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान की शाखाओं और उन शाखाओं के अध्ययन क्षेत्र को निम्नवत् सारणी में प्रस्तुत किया जा सकता है—

1.9 मनोविज्ञान की शाखाएँ और उनका अध्ययन क्षेत्र (Branches of Psychology and their Study Scope)

शाखा	अध्ययन-क्षेत्र
1. सामान्य मनोविज्ञान (General Psychology)	सामान्य परिस्थितियों में सामान्य व्यक्तियों के सामान्य व्यवहार और अनुभूतियों का अध्ययन।
2. असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal-Psychology)	असामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों और अनुभूतियों का अध्ययन, जैसे— मानसिक रोगग्रस्त, बौद्धिक या शारीरिक दोषयुक्त।
3. बाल मनोविज्ञान (Child Psychology)	साधारण व असाधारण परिस्थितियों में बालक के व्यवहार तथा अनुभूतियों का अध्ययन, गर्भावस्था से लेकर परिपक्वावस्था तक के शारीरिक तथा मानसिक विकास का अध्ययन
4. किशोर मनोविज्ञान (Adolescent Psychology)	लगभग 12 वर्ष की आयु से 21 वर्ष की आयु के व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक, व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का अध्ययन।
5. वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology)	व्यक्ति के वैयक्तिक विशेषताओं तथा विभिन्नताओं का अध्ययन।
6. समाज मनोविज्ञान (Social Psychology)	विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में, व्यक्ति और समाज की पारस्परिक क्रियाओं का अध्ययन।
7. पशु मनोविज्ञान (Animal Psychology)	पशुओं की क्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन नियंत्रित वातावरण में किया जाता है।
8. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental Psychology)	प्राणियों के व्यवहार का प्रयोगात्मक अध्ययन, विशेष रूप से संवेदन, प्रत्यक्षीकरण, संवेग, सीखना, स्मरण-विस्मरण आदि क्रियाओं का अध्ययन।
9. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytic Psychology)	मानव मस्तिष्क की जटिल प्रक्रियाओं का अध्ययन।
10. उत्पत्तिमूलक मनोविज्ञान (Genetic Psychology)	व्यक्ति तथा प्रजाति और उनके क्रमिक विकास का अध्ययन।
11. विकास मनोविज्ञान (Developmental Psy-क्रमिक chology)	व्यवहार तथा मानसिक क्रियाओं का एक क्रम से अध्ययन और विकास के कारणों का विश्लेषण तथा व्यक्तियों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन करके उनके अन्तर के कारणों का पता लगाना।
12. शारीरिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology)	मानसिक क्रियाओं और नाड़ी मंडल, गति इन्द्रियों की क्रियाओं का ज्ञानेन्द्रियों तथा अध्ययन।
13. प्रौढ़ मनोविज्ञान (Adult Psychology)	प्रौढ़ व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन।
14. परामनोविज्ञान (Parapsychology)	बोध, दूरबोध और अतीन्द्रिय दृष्टि जैसी चीजों के बारे में अध्ययन।
15. जीओसाइकोलॉजी व्यवहार (Geopsychology)	मानसिक अवस्थाओं और से सम्बन्धित, प्राकृतिक पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन।
16. व्यावहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology)	सेना के विभिन्न प्रकार के सैनिकों और अधिकारियों के चुनाव में, उनके
(i) सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology)	प्रशिक्षण में, उनकी पदोन्नति में तथा उनके स्थानान्तरण में उपयोगी।
(ii) औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psychology)	उद्योग, व्यापार, वाणिज्य सम्बन्धी क्रियाओं का अध्ययन।
(iii) कानूनी मनोविज्ञान (Legal Psychology)	अपराधियों, न्यायाधीशों, वकीलों, गवाहों आदि के व्यवहारों और क्रियाओं का अध्ययन।
(iv) चिकित्सा मनोविज्ञान (Clinical Psychology)	मानसिक रोगग्रस्त व्यक्तियों के असाधारण व्यवहारों का अध्ययन।
(v) उपभोक्ता मनोविज्ञान (Consumer Psychology)	उपभोक्ताओं के व्यवहार को उनकी अपनी परिस्थितियों तथा वस्तुओं के उपभोग सम्बन्धी वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन।

शाखा	अध्ययन-क्षेत्र
(vi) सलाह और निर्देशन (Counselling and Guidance)	व्यक्तियों को व्यवसाय, चुनाव तथा व्यक्तिगत समस्याओं की मनोवैज्ञानिक ढंग से जाँच और निरीक्षण तथा अध्ययन करके सलाह देना।
(vii) सेवा चयन (Field of Selection for Service)	मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के आधार पर कर्मचारियों/अधिकारियों का चुनाव।
17. शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)	बाल विकास का अध्ययन, शिक्षा के अंगों, प्रक्रिया तथा सीखने की दशाओं का अध्ययन।

1.10 शिक्षा-मनोविज्ञान (Educational-Psychology)

शिक्षा और मनोविज्ञान का अर्थ जानने के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मानव व्यवहार में रूपान्तर लाना है और मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसका सम्बन्ध व्यावहारिक परिवर्तनों से है। शिक्षा–मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने से है। शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग है। **स्किनर** के शब्दों में–"शिक्षा-मनोविज्ञान उन खोजों का शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो कि विशेषतया मानव प्राणियों के अनुभव और व्यवहार से सम्बन्धित है।"

शिक्षा-मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है–'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान'। अतः इसका शाब्दिक अर्थ है–'शिक्षा-सम्बन्धी मनोविज्ञान'। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव-व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अतः हम **स्किनर** के शब्दों में कह सकते हैं–"शिक्षा-मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार-सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"

"Educational-psychology takes its meaning from education, a social process and from psychology, a behavioural science." **—Skinner**

शिक्षा-मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने के लिए **स्किनर** (Skinner) ने निम्नलिखित तथ्यों की ओर संकेत किया है–

(i) शिक्षा-मनोविज्ञान का केन्द्र, मानव-व्यवहार है।

(ii) शिक्षा-मनोविज्ञान, खोज और निरीक्षण से प्राप्त किए गए तथ्यों का संग्रह है।

(iii) शिक्षा-मनोविज्ञान में संगृहीत ज्ञान को सिद्धान्तों का रूप प्रदान किया जा सकता है।

(iv) शिक्षा-मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने के लिए अपनी स्वयं की पद्धतियों का प्रतिपादन किया है।

(v) शिक्षा-मनोविज्ञान के सिद्धान्त और पद्धतियाँ शैक्षिक सिद्धान्तों और प्रयोगों को आधार प्रदान करते हैं।

स्किनर–"शिक्षा-मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।"

"Educational-psychology covers the entire ranges of behaviour and personality as related to education." **—Skinner**

क्रो व क्रो–"शिक्षा-मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।"

"Educational psychology describes and explains the learning experiences of an individual from birth through old age."

—Crow and Crow (p. 7)

नॉल व अन्य–"शिक्षा-मनोविज्ञान मुख्य रूप से शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से परिवर्तित या निर्देशित होने वाले मानव-व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित है।"

"Educational psychology is concerned primarily with the study of human behaviour as it is changed or directed under the social process of education."

—Noll and Others : *Journal of Educational Psychology*, 1948, p. 361.

1.11 शिक्षा-मनोविज्ञान की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Educational Psychology)

सर्वमान्य रूप से शिक्षा-मनोविज्ञान को शिक्षा का विज्ञान कहा गया है। निम्न तथ्यों की प्रस्तुति से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि इसकी प्रकृति विज्ञानमय है–

(i) शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की व्यावहारिक शाखाओं में से एक है। मनोविज्ञान के सिद्धान्त, नियम एवं विधियों का प्रयोग करके यह विद्यार्थियों के अनुभवों और व्यवहार का अध्ययन करने में सहायक होता है।

(ii) मनोविज्ञान में जीवधारियों के जीवन की समस्त क्रियाओं से सम्बन्धित व्यवहार का अध्ययन होता है जबकि शिक्षा-मनोविज्ञान शैक्षणिक पृष्ठभूमि में विद्यार्थी के व्यवहार का अध्ययन करने तक ही अपने आपको सीमित रखता है।

(iii) शिक्षा-मनोविज्ञान 'शिक्षा क्यों' और 'शिक्षा क्या' जैसे प्रश्नों का उत्तर देने में अपने आपको असमर्थ पाता है। ये प्रश्न शिक्षा दर्शन द्वारा सुलझाए जाते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान तो विद्यार्थियों को संतोषजनक ढंग से उचित शिक्षा देने के लिए उचित जानकारी, कौशल और तकनीकी परामर्श देने का प्रयत्न करता है।

(iv) शिक्षा-मनोविज्ञान की गिनती कलात्मक विषयों में की जाती है। इस मान्यता के पीछे इसकी प्रकृति और इसका स्वरूप ही है जो सभी तरह से विज्ञानमय ही नजर आता है। वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त ज्ञान में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(A) वस्तुनिष्ठता एवं तथ्यात्मक ज्ञान–लेस्ट्रली के अनुसार–"विज्ञान एक वस्तुनिष्ठ, तार्किक एवं व्यवस्थित अध्ययन पद्धति है।" शिक्षा-मनोविज्ञान के अन्तर्गत किए जाने वाले अध्ययन वस्तुनिष्ठ तथा तथ्यात्मकता से आपूरित होते हैं। तथ्यों का सतर्कतापूर्वक सम्यक संकलन और विभाजन किया जाता है। अध्ययनकर्ता अपने अध्ययन में व्यक्तिगत भावनाओं व पूर्वाग्रहों को नहीं आने देता।

(B) निरीक्षण, परीक्षण एवं प्रयोग–शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन का दृष्टिकोण अथवा परिप्रेक्ष्य वैज्ञानिक होता है। इसमें निष्पक्ष और व्यवस्थित निरीक्षण किया जाता है। निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग पर आधारित निष्कर्षों को मान्यता प्राप्त होती है। प्रयोगात्मक विधि इसका सर्वश्रेष्ठ परिलक्षण होता है जहाँ नियन्त्रित दशाओं में प्रयोग कर निरीक्षण किया जाता है और निष्कर्ष निकाला जाता है। उदाहरणार्थ–व्यक्तित्व या अधिगम के क्षेत्र में निरीक्षण, परीक्षण

और प्रयोग के द्वारा अनेक नियमों और सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया।

(C) **कार्य-कारण सम्बन्ध**—वैज्ञानिक अध्ययन में कार्य तथा कारण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन में कार्य-कारण सम्बन्धों पर विशेष महत्व दिया जाता है। किसी भी घटना के क्या कारण हो सकते हैं, यह निरीक्षित किया जाता है। जैसे—जिस अध्यापक में सम्प्रेषण क्षमता की कमी होती है, उसकी कक्षा में शोर अधिक होता है। यदि अध्यापन विधि विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार नहीं होती है तो अधिगम का स्तर निम्न होता है।

(D) **सामान्यीकरण या सार्वभौमिकता**—विज्ञान में विभिन्न प्रघटनाओं के सम्बन्ध में प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण और सार्वभौमिकता अनिवार्य होता है। शिक्षा-मनोविज्ञान में प्राप्त की गई एकरूपता के आधार पर कतिपय निष्कर्षों का प्रतिपादन किया जाता है तथा उन निष्कर्षों के आधार पर सामान्यीकरण निकाले जा सकते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान, मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। मानव व्यवहार के अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण करने में विशेष जागरूकता की आवश्यकता होती है, क्योंकि मानव व्यवहार में बड़ी अनिश्चितता होती है, जो विभिन्न कारकों से प्रभावित और परिवर्तित होता है, जैसे—स्थान, परिवेश, समय, थकान, साथी आदि।

(E) **सत्यापनशीलता**—शिक्षा-मनोविज्ञान के परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों को पुनः परीक्षण के द्वारा सत्यापित किया जा सकता है। यदि आन्तरिक और बाह्य परिस्थितियाँ अपरिवर्तित हैं तो किसी विद्यार्थी का दो बार मापन करने पर समान परिणाम व अंक प्राप्त होंगे। उदाहरणार्थ—'बुद्धि सृजनात्मकता को प्रभावित करती है।' इस सिद्धान्त का सत्यापन किया जा सकता है।

1.12 शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्य (Objectives of Educational-Psychology)

स्किनर (Skinner) के अनुसार—स्किनर ने शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है—1. सामान्य उद्देश्य, 2. विशिष्ट उद्देश्य।

I. **सामान्य उद्देश्य (General Aims)—स्किनर** ने शिक्षा-मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य केवल एक मानते हुए लिखा है—"शिक्षा-मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य है—संगठित तथ्यों और सामान्य नियमों का एक ऐसा संग्रह प्रदान करना, जिसकी सहायता से शिक्षक सांस्कृतिक और व्यावसायिक लक्ष्यों को अधिक-से-अधिक प्राप्त कर सके।"

"The general aim of educational-psychology is to provide a body of organized facts and generalizations that will enable the teacher to realize increasingly both cultural and professional objectives."

—Skinner

शिक्षा-मनोविज्ञान के सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(i) सिद्धान्तों की खोज तथा तथ्यों का संग्रह।
(ii) बालक के व्यक्तित्व का विकास।
(iii) शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करना।
(iv) शिक्षण विधि में सुधार।
(v) शिक्षा उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति।

II. **विशिष्ट उद्देश्य (Specific Aims)**—शिक्षा-मनोविज्ञान, केवल व्यक्ति के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति ही नहीं करता, अपितु वह उसके विशिष्ट लक्ष्यों की पूर्ति में भी सहायक होता है। यह व्यक्ति को उसकी योग्यता, क्षमता तथा कुशलता को पहचानने में योग देता है। शिक्षक, छात्रों की सीखने की सीमाओं को पहचानता है। **स्किनर** ने शिक्षा-मनोविज्ञान के 8 विशिष्ट उद्देश्य बताये हैं—(i) बालकों की बुद्धि, ज्ञान और व्यवहार में उन्नति किए जाने के विश्वास को दृढ़ बनाना, (ii) बालकों के प्रति निष्पक्ष और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण का विकास करने में सहायता देना, (iii) बालकों के वांछनीय व्यवहार के अनुरूप शिक्षा के स्तरों और उद्देश्यों को निश्चित करने में सहायता देना, (iv) सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप और महत्त्व को अधिक अच्छी प्रकार समझने में सहायता देना, (v) शिक्षण की समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले तथ्यों और सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान करना, (vi) शिक्षक को अपने और दूसरों से शिक्षण के परिणामों को जताने में सहायता देना, (vii) शिक्षक को छात्रों के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए आवश्यक तथ्य और सिद्धान्त प्रदान करना, (viii) प्रगतिशील शिक्षण-विधियों, निर्देशन-कार्यक्रमों एवं विद्यालय-संगठन और प्रशासन के स्वरूपों को निश्चित करने में सहायता देना।

शिक्षा-मनोविज्ञान का अर्थ अपने में स्पष्ट है। शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग ही शिक्षा-मनोविज्ञान है। शिक्षा-मनोविज्ञान विद्यार्थी तथा सीखने की क्रियाओं के मध्य शिक्षक तथा छात्र का व्यवहार है। शिक्षा-मनोविज्ञान शिक्षा से अर्थ ग्रहण करता है, मनोविज्ञान से सामाजिक प्रक्रिया ग्रहण करता है और बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन द्वारा उसे सर्वांगस्वरूप प्रदान करता है।

शिक्षा-मनोविज्ञान का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं से है, इसलिये (i) यह मानव व्यवहार पर केन्द्रित है, (ii) निरीक्षण तथा खोज द्वारा प्राप्त तथ्यों तथा सूचनाओं का भण्डार है, (iii) इस ज्ञान भण्डार से नियम तथा सिद्धान्तों का निरूपण होता है, (iv) यह ज्ञान की खोज की एक पद्धति है, (v) इससे शिक्षा की समस्याओं का समाधान होता है, (vi) समस्त प्राप्त ज्ञान, नियम तथा सिद्धान्त शैक्षिक व्यवहार को आधार प्रदान करते हैं।

शिक्षा-मनोविज्ञान एक व्यावसायिक विषय के रूप में विकसित हुआ है। शिक्षक बनने वाले व्यक्ति के व्यवहार में भी परिवर्तन की आवश्यकता है, अतः शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन नवशिक्षक के लिये अपरिहार्य है।

कुल मिलाकर शिक्षा मनोविज्ञान अपने अर्थ, प्रकृति तथा क्षेत्र में स्पष्ट है और इसका उद्देश्य मंगलकारी है। यह एक ओर शिक्षा की प्रक्रिया के नियोजन में दिशा-निर्देश करता है तो दूसरी ओर कक्षागत परिस्थितियों में आनुभविक आधार प्रदान कर नई पीढ़ी के नवनिर्माण में योग देता है।

1.13 शिक्षा-मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Educational-Psychology)

शिक्षा और मनोविज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप में शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग होने लगा है इसकी सहायता से ही शिक्षण सम्बन्धी समस्त समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया जाता है। चूँकि शिखा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र बाल्यावस्था या किशोरावस्था तक ही सीमित नहीं है बल्कि व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन की समस्त शैक्षणिक परिस्थितियों तक विस्तृत है। इसके अध्ययन क्षेत्र एवं विषय-वस्तु को निम्नलिखित रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है—

I. **अभिवृद्धि एवं विकास (Growth and Development)**—शिक्षा-मनोविज्ञान में मनुष्य की शारीरिक अभिवृद्धि और शारीरिक, मानसिक भाषायी, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसमें मानव अभिवृद्धि तथा विकास का अध्ययन चार कालों—शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था के क्रम में किया जाता है। इसमें मनुष्य के विकास में उसके वंशानुक्रम और पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन भी किया जाता है।

II. **मानसिक योग्यताएँ और उनका मापन (Mental Abilities and their Measurement)**—शिक्षा-मनोविज्ञान में मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक, दोनों प्रकार के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है और इन दोनों प्रकार के व्यवहार के कारक, प्रेरक एवं नियंत्रक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। इन तत्वों में उसकी मानसिक योग्यताओं (बुद्धि, अभिक्षमता, चिन्तन एवं तर्क आदि) का बड़ा महत्व होता है। शिक्षा मनोविज्ञान में मनुष्य की मानसिक योग्यताओं और उनके मापन की विधियों का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है।

III. **मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन (Mental Health and Adjustment)**—मनोविज्ञान ने स्पष्ट किया कि बच्चों की शिक्षा एवं विकास में बच्चों एवं अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उनकी समायोजन क्षमता की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा-मनोविज्ञान में बालकों और अध्यापकों के मानसिक विकास में बाधक एवं साधक तत्वों का अध्ययन किया जाता है और साथ ही कुसमायोजन के कारणों और सुसमायोजन की विधियों का अध्ययन किया जाता है।

IV. **व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Differences)**—शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कोई दो बालक समान नहीं होते। ऐसा क्यों होता है और इसका शिक्षा प्रक्रिया में क्या महत्व है, इस सबका अध्ययन भी इसके क्षेत्र में आता है।

V. **विशिष्ट बालक (Exceptional Children)**—प्रारम्भ में शिक्षा-मनोविज्ञान में केवल सामान्य बालकों का ही अध्ययन किया जाता था। परन्तु अब इसमें विशिष्ट या अपवादी बालकों का भी अध्ययन किया जाता है, जैसे—मेधावी, पिछड़े, विकलांग, अपराधी आदि। उनके व्यवहारों को नियंत्रित करने एवं उनकी शिक्षा के लिए विशिष्ट शिक्षण विधियों का विकास भी किया जाता है। आज यह सब भी उसके अध्ययन क्षेत्र में आता है।

VI. **समूह मनोविज्ञान (Group Psychology)**—अब किसी भी देश में बालकों को समूह रूप में पढ़ाया जाता है। शिक्षा-मनोविज्ञान में व्यक्ति के अध्ययन के साथ उसके समूह का अध्ययन भी किया जाता है, उनके समूह मन और सामूहिक क्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है और समूह में व्यक्ति का व्यवहार क्यों बदल जाता है और कैसे बदलता है, इस सबका अध्ययन भी किया जाता है।

VII. **सीखना (Learning)**—शिक्षा-मनोविज्ञान में सीखने के स्वरूप, उसके कारक, प्रेरक एवं नियंत्रक तत्वों, सिद्धान्तों और नियमों का अध्ययन किया जाता है और वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है और इसके आधार पर शिक्षण के सिद्धान्त एवं नियमों की खोज की जाती है। विभिन्न स्तर के बालकों के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाता है।

1.14 विशिष्ट शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Special Education)

शब्द 'विशिष्ट शिक्षा' के अन्तर्गत उन पक्षों को सम्मिलित किया जाता है जो विशिष्ट बालकों पर लागू होता है। यह शिक्षा शारीरिक, मानसिक और प्रतिभाशाली अथवा विशिष्ट गुण सम्पन्न बालकों के लिए अपनायी जाती है। विशिष्ट शिक्षा का इतिहास का क्षेत्र दीर्घ है। जाति व्यवस्था का प्राचीन काल में स्वीकृत आधार शिक्षा के प्रत्यय से सम्बन्धित है। प्राचीन काल से ब्राह्मण शिक्षा के क्षेत्र में और क्षत्रिय युद्ध क्षेत्र में निपुण माने जाते हैं। इसी प्रकार वैश्यों एवं शूद्रों के प्रशिक्षण भी उनके कार्य-क्षेत्र के अनुरूप अलग-अलग थे। इस प्रकार का वर्गीकरण मूल रूप से विभिन्न प्रतिभाओं के मनुष्यों को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में रखने के दृष्टिकोण से किया गया था।

छात्रों की प्रतिभाओं को माता-पिता अथवा अध्यापकगण पहचानते थे, जो उन्हें शिक्षण प्रविधियों में भी विशिष्ट बालकों की शिक्षा के क्षेत्र में इसी प्रकार की प्रक्रियाओं का अनुसरण किया जाता है। शिक्षाविद् सामान्य तथा शारीरिक रूप से बाधित बालकों पर विशेष ध्यान देने के कारण विशिष्ट बालकों की आवश्यकता पर कम ध्यान दे पाते हैं। विशिष्ट शिक्षा के बारे में विभिन्न विचार विवादास्पद हैं। ये विचार बालकों की शिक्षा की मुख्य धारा से भिन्न हैं। जिसके कारण विशिष्ट बालकों को विशेष तथा अधिक अवसर प्रदान करने के पक्ष में है।

1.15 विशिष्ट शिक्षा की अवधारणा (Concept of Special Education)

विशिष्ट शिक्षा शिक्षाशास्त्र की एक ऐसी शाखा है जिसके अन्तर्गत उन बच्चों को शिक्षा दी जाती है जो सामान्य बच्चों से शारीरिक मानसिक और सामाजिक क्षेत्रों में कुछ अलग होते हैं। इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएँ भी सामान्य बच्चों से कुछ विशिष्ट होती हैं। यही कारण है कि इनको विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक (Children with special needs) भी कहा जाता है। ये बच्चे अपनी सहायता स्वयं नहीं कर पाते। अतः इनकी सहायता के लिए तथा इनको सक्षम बनाने के लिए, विद्यालय, परिवार, समाज और परिवार में समायोजन के लिए विशेष प्रकार की शिक्षा दी जाती है, जिससे वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में स्वयं समर्थ हो सकें। इनकी सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि "विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट रूप से तैयार किया गया एक शैक्षिक अनुदेशन है जिससे शैक्षणिक गतिविधियों, विशेष पाठ्यक्रम और विशेष शिक्षक के द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षण अधिगम सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।" अतः विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अलग विद्यालयों में विशेष ढंग से दी जाने वाली शिक्षा की विशिष्ट शिक्षा कहते हैं।

विशिष्ट शिक्षा को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है—

परिभाषाएँ

- **एस. ए. किर्क** के अनुसार—"विशिष्ट बालक वह है जो कि शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विशेषताओं में किसी सामान्य बालक से उस सीमा तक विचलित होता है कि वह अपनी क्षमताओं के अधिकतम विकास हेतु सहायता, निर्देशन, विद्यालयी कार्यक्रमों में परिमार्जन तथा विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता रखता है।"

  "An exceptional child is he who deviates from the normal child in physical, mental & social characteristics to such an extent that he requires a modifications of school practices of special educational services in order to develop to his maximum capacity." **—S.A. Kirk**

- **हीवर्ड** के अनुसार—"विशिष्ट बालकों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं, जिन्हें सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है या जिनका मानसिक या शैक्षिक निष्पादन या सृजन अत्यन्त उच्च कोटि का होता है या जिनको व्यावसायिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याएँ घेर लेती हैं या वे विभिन्न शारीरिक अपंगताओं या निर्बलताओं से पीड़ित रहते हैं, जिसके कारण ही उनके लिये अलग से विशिष्ट प्रकार की शिक्षा व्यवस्था करनी होती है।"

  "The term exceptional children includes children who experience difficulties in learning or behavioural, emotional, or social problem, children with physical, disabilities or

sensory impairments and children who are intellectually gifted or have a special talent so that special education is necessary to all of, them to fulfil their potential." **—Heward**

- **सचवार्ट्ज** के अनुसार—"जब हम किसी को विशिष्ट कहकर वर्णित करते हैं, हम व्यक्ति को 'औसत' या 'सामान्य' लोगों, जिनके हम एक या इससे अधिक लक्षणों के सम्बन्ध में जानते हैं, से अलग रखते हैं।" "Whent we describe someone as 'Exceptional' we set that person apart from the 'average' or 'normal' people. We know with respect to one or more characteristics." **—Schwartz**

1.16 विशिष्ट शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Special Education)

(i) विशिष्ट शिक्षा विशेष बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करती है चाहे वह बच्चा प्रतिभाशाली हो या पिछड़ा।

(ii) विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट बच्चों के समाज के साथ समायोजन में सहायता करती है।

(iii) विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट बच्चों की पहचान व निदान में सहायक है।

(iv) विशिष्ट शिक्षा की प्रकृति विकासात्मक है। विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट बालकों को आत्मनिर्भर बनाती है तथा उनमें आत्मविश्वास का संचार करती है।

(v) विशिष्ट शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष शिक्षा सामग्री, विशेष पाठ्यक्रम व विशेष प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की आवश्यकता होती है।

(vi) विशिष्ट शिक्षा द्वारा पिछड़े बच्चों को उनके स्तर के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

(vii) यह शिक्षा बालकों की क्षमताओं, योग्यताओं, रुचियों व अभिरुचियों को ध्यान में रखकर दी जाती है।

(viii) विशिष्ट शिक्षा सार्वभौमिक प्रकृति की शिक्षा है। यह शिक्षा सभी प्रकार के विशिष्ट बच्चों को दी जाती है, चाहे वे बच्चे धर्म, जाति, लिंग, रूप व आकार के अनुसार भिन्न ही क्यों न हों।

(ix) प्रत्येक नागरिक को सामान्य शिक्षा लेने का अधिकार है। अतः विशिष्ट बालकों को विशिष्ट शिक्षा का अधिकार है।

(x) विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट बच्चों के हर पक्ष का विकास करती है चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक या सामाजिक या संवेगात्मक।

(xi) विशिष्ट शिक्षा लोगों का विशिष्ट बालकों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव लाती है।

1.17 विशिष्ट (विशेष) शिक्षा का कार्यक्षेत्र (Scope of Special Education)

विशिष्ट बालकों एवं उनके व्यक्तित्व से संबंधित विभिनन समस्याओं का अध्ययन करना विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इसके विषय वस्तु के अंर्तगत विशिष्ट बालकों के पहचान उनकी शिक्षा, निर्देशन, निदान उनके व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित समस्याओं पर विचार किया जाता है।

I. **पहचान**—विशिष्ट बालकों की पहचान करना विशिष्ट शिक्षा की मुख्य विषयवस्तु है। इसके अन्तर्गत दृष्टिवाधित श्रवण बाधित, मानसिक मंद, अधिगम अक्षम, बुद्धिमान बालकों की पहचान इनकी विशेषताओं के आधार पर किया जाता है। यद्यपि इन बालकों को पहचान करने के लिए अलग–अलग तरह के यंत्रों एवं विधियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे दृष्टि बाधित बालकों को पहचान करने के लिए स्नैलेन चार्ट, श्रवण बाधितों के लिए ऑडियोमीटर, मानसिक मंद बालकों के लिए बुद्धि परीक्षण प्रयुक्त किया जाता है।

II. **दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा**—दृष्टि बाधित बालक वे बालक होते हैं जो ठीक प्रकार से देख पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे बालक भी दो प्रकार के होते हैं—पूर्ण दृष्टि बाधित एवं अल्प दृष्टि वाले बालक विशिष्ट शिक्षा के अर्न्तगत इन बालकों की शैक्षिक आवश्यकताएँ जैसे—ब्रेल, एवेकस, ट्रेलर फ्रेम, परिवार्धित मानचित्र के बारे में अध्ययन किया जाता है।

III. **श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा**—विशिष्ट शिक्षा, शिक्षाशास्त्र की एक शाखा के जिसके अर्न्तगत श्रवण बाधित बालकों की पहचान, उनके प्रकार, शिक्षा, शिक्षा की विधि श्रवण बाधिता के कारण उसके परिणाम इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। इनके शिक्षण विधि में ओष्ठ पठन फिंगर स्पेलिंग, संकेत भाषा, स्पीच रीडिंग आदि प्रमुख है। विशेष शिक्षा के अन्तर्गत इन सभी शिक्षण विधियों का अध्ययन किया जाता है।

IV. **मानसिक मंद बालकों की शिक्षा**—मानसिक रूप से मंद बालक एक विशिष्ट प्रकार के बालक होते हैं। इसके अर्न्तगत वे बालक आते हैं जिनको बुद्धि स्तर तथा सोचने समझने की क्षमता सामान्य बालकों से कम होती है तथा वे समाज के साथ समायोजन करने में असमर्थ होते हैं। ऐसे बालकों की मानसिक बाधिता के परिणाम भिन्न–भिन्न होते हैं। इन बालकों की पहचान, मानसिक मंदता के कारण, मानसिक मंद बालकों के प्रकार, उनकी शिक्षा एवं ऐसे बालकों की समस्याओं का अध्ययन विशिष्ट शिक्षा में किया जाता है।

V. **अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा**—अधिगम अक्षम वैसे बालक होते हैं जिनकी बुद्धिलब्धि अन्य सामान्य बालकों के समान होती है। लेकिन ऐसे बालकों को पढ़ने–लिखने, गणितीय क्रियाओं में कठिनाई होती है। इनकी शिक्षण विधि भी सामान्य बालकों से अलग होता है। विशिष्ट शिक्षा के अन्तर्गत ऐसे बालकों की समस्या एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन किया जाता है।

VI. **बहुविकलांग बालकों की शिक्षा**—विशिष्ट शिक्षा के द्वारा वैसे बालकों को भी शिक्षा प्रदान की जाती है जो बहुविकलांग होते हैं। बहुविकलांग वैसे बालक होते हैं, जो एक से अधिक विकलांगता से ग्रसित होते हैं। ऐसे बालकों को शिक्षण में कई परेशानियाँ होती है।

VII. **व्यवहार का अध्ययन**—विशिष्ट शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालकों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इन व्यवहारों के आधार पर इनके शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण किया जाता है।

VIII. **व्यक्तित्व विकास का अध्ययन**—इसके अन्तर्गत विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले विकलांग व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया, निर्धारक एवं प्रभावक कारकों का अध्ययन किया जाता है।

IX. **मापन एवं मूल्यांकन**—विशिष्ट शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालकों की शैक्षिक उपलब्धियों के मापन तथा मूल्यांकन पर भी जोड़ डालते हैं। शिक्षार्थी की समुचित शिक्षा के लिए आवश्यक है कि शिक्षार्थी की बुद्धि, अभिरुचि, मनोवृत्ति, अभिक्षमता की माप किया जाय तथा उसकी उपलब्धियों का सही–सही मूल्यांकन किया जाय। विशिष्ट शिक्षा के

द्वारा इस तरह के मापन एवं मूल्यांकन के अध्ययन पर विशेष बल डाला जाता है, ताकि शिक्षा अर्थपूर्ण एवं लाभप्रद हो सके।

X. **निर्देशन एवं मानसिक स्वास्थ्य**—विशिष्ट शिक्षा के कार्यक्षेत्र में निर्देशन तथा शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की प्रधानता बताई गई है। विशिष्ट बालकों को निर्देशन तीन स्तर पर दिये जाते हैं—वैयक्तिक निर्देशन, शैक्षिक निर्देशन तथा व्यावसायिक निर्देशन। विशिष्ट शिक्षक इन तीनों प्रकार के निर्देशनों का उचित प्रबंध करके शिक्षार्थियों को अपने सामर्थ्य के अनुसार अनुकूलन समायोजन में मदद करता है। इतना ही नहीं विशिष्ट शिक्षा के द्वारा शिक्षक विशिष्ट बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सक्षम हो पाते हैं।

XI. **सीखने की परिस्थिति**—मनोविज्ञान के अनुसार सीखने की परिस्थिति बालकों के सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावित करता है। इसमें शिक्षक की मनोवृत्ति (Attitude), वर्ग या कक्षा की परिस्थिति, विद्यालय की सांवेगिक आवोहवा आदि को महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि इन सब कारकों से सीखने की परिस्थिति का निर्माण होता है। जब सीखने की परिस्थिति ऐसी होती है जिसमें बालकों की मनोवृत्ति अनुकूल होती है, वर्ग में विशिष्ट बालकों को बैठने की आरामदेह जगह होती है, कमरा साफ सुथरा होता है, रोशनी की व्यवस्था अच्छी होती है, व विद्यालय में अधिक कोलाहल नहीं होता है तो शिक्षा अधिक लाभप्रद एवं अर्थपूर्ण होती है। इस प्रकार विशिष्ट शिक्षा के कार्यक्षेत्र में इस तथ्य का भी पता लगाना है कि विद्यालय का वातावरण कैसा है।

XII. **उपचार**—विशिष्ट बालकों को समय–समय पर अनेक तरह के स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न तरह के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। इन विशेषज्ञों में ऑडियोलॉजिस्ट, चिकित्सा मनोवैज्ञानिक डॉक्टर, ह्वियरिंग एवं इयर मोल्ड टैक्नीशियन, स्पीच पैथोलॉजिस्ट, रिहैबिलिटेशन साइकोलाजिस्ट हैं। इन सभी विशेषज्ञों का कार्य विशिष्ट शिक्षा के कार्यक्षेत्र के अर्न्तगत आता है।

XIII. **पुनर्वास**—विशिष्ट शिक्षा का एक प्रमुख कार्यक्षेत्र विकलांग व्यक्तियों को सामाजिक, व्यावसायिक, मानसिक रूप से पुनर्वासित करना है। पुनर्वास से तात्पर्य विकलांग व्यक्तियों को शारीरिक, सांवेगिक, बौद्धिक, मनोचिकित्सकीय अथवा सामाजिक क्षेत्र में जिसमें भी सम्बद्ध विकलांगता के कारण, व्यक्ति विकलांगता के कारण पिछड़ा हो तो पुनर्वास प्रक्रिया के द्वारा वह व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार अपने स्तर को प्राप्त कर सकता है।

1.18 एकीकृत शिक्षा का अर्थ (Meaning of Integrated Education)

एकीकृत शिक्षा एक प्रकार की शिक्षा प्रणाली है, इसमें एकीकृत प्रत्येक स्कूल में कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और अन्य पृष्ठभूमि के बच्चों और वयस्कों को एक साथ लाते हैं और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देते हैं। स्कूल, विद्यार्थियों, शिक्षकों और गवर्नर को एक धार्मिक संतुलन के साथ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और वे जिस सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसे स्वीकार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

एकीकृत शिक्षा मुख्यतः अमेरिका की 'मुख्य धारा आन्दोलन' का ही परिणाम है। एकीकृत शिक्षा शारीरिक व मानसिक रूप से बाधित बालकों को सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्राप्त करना व विशिष्ट सेवाएँ देकर विशिष्ट आवश्यकताओं के प्राप्त करने के लिए सहायता करती है।

क्रुकशंक के अनुसार—''विशिष्ट बालकों की शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का हिस्सा है।''

अतः एकीकृत शिक्षा वह शिक्षा है जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक तथा सामान्य बालक सामान्य कक्षा में साथ-साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। एकीकृत शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का विकल्प न होकर विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। यह शिक्षा अपंग बालकों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाती है तथा उनके नागरिक अधिकारों को यह शिक्षा सुनिश्चित करती है।

एकीकृत शिक्षा शिक्षण की समानता व अवसर जो अपंगों को अब तक नहीं दिये गये, उनकी मूल रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक आयाम है।

विभिन्न शिक्षाविदों द्वारा समन्वित शिक्षा को इस प्रकार वर्णित किया गया है—

- सामान्य मानसिक विकास सम्भव है।
- समन्वित शिक्षा कम खर्चीली है।
- समन्वित शिक्षा के माध्यम से एकीकरण सम्भव है।
- सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है।
- समानता के सिद्धान्त का अनुपालन करती है।
- शैक्षिक एकीकरण सम्भव है।

1.19 एकीकृत शिक्षा की प्रकृति एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Integrated Education)

(i) यह शिक्षा अपंग बच्चों को कम प्रतिबंधित व अधिक प्रभावी वातावरण उपलब्ध कराती है, जिससे वे सामान्य बालकों के समान जीवनयापन कर सकें।

(ii) समन्वित शिक्षा द्वारा जो सुविधाएँ सामान्य बालकों को प्रदान की जाती हैं वही सुविधाएँ असमर्थ बालकों को भी प्रदान की जाती हैं।

(iii) यह शिक्षा असमर्थ बालकों को उनके व्यक्तित्व की पहचान के आधार पर व्यवहार करती है, उनकी बाधिता के अनुसार नहीं।

(iv) समन्वित शिक्षा माता-पिता, अध्यापकों व शिक्षाविदों के सामूहिक प्रयास पर आधारित है।

(v) समन्वित शिक्षा कम खर्चीली है तथा सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है।

(vi) यह शिक्षा अपंग बालकों को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करती है ताकि वे समाज के अन्य लोगों की भाँति आत्मनिर्भर होकर अपना जीवनयापन कर सकें।

(vii) यह शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बच्चों के बीच के शारीरिक अन्तर को खत्म करती है।

(viii) यह शिक्षा अपंग व सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण व सम्बन्ध बनाने में समाज के प्रत्येक स्तर पर सहायक है।

(ix) यह शिक्षा 'सबके लिए शिक्षा' के अधिकार का अनुपालन करती है। यह शिक्षा जाति, रंग व धर्म आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करती है।

(x) समन्वित शिक्षा द्वारा समर्थ व असमर्थ बच्चे एक-दूसरे के नजदीक आते हैं जिससे विद्यालय का वातावरण अच्छा बनता है।

1.20 एकीकृत शिक्षा का महत्त्व
(Importance of Integrated Education)

असमर्थ बालकों के लिए पहले विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता महसूस की गयी, क्योंकि विशिष्ट बालक सामान्य बालकों से अलग होते हैं। लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने महसूस किया कि इससे बच्चों में हीन भावना का विकास हो रहा है। इसलिए विशिष्ट व सामान्य बच्चों के लिए एक शिक्षा अर्थात् समाकलित शिक्षा को अपनाया गया। समाकलित शिक्षा सामान्य व विशिष्ट बच्चों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करती है। समन्वित शिक्षा के महत्त्व को अग्र प्रकार व्यक्त किया गया है–

I. **सामाजिक मूल्यों का विकास**—समाज में सभी प्रकार के (समर्थ व असमर्थ) बच्चे होते हैं। समन्वित शिक्षा द्वारा समर्थ व असमर्थ दोनों प्रकार के बच्चों को समान शिक्षित किया जाता है। सभी प्रकार के वर्गों के बालक आपस में मिलते हैं। इस प्रकार उनमें समाजीकरण की भावना का विकास होता है। उनमें सहयोग, सहायता, समायोजन आदि विभिन्न प्रकार के सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।

II. **प्राकृतिक वातावरण**—सामान्य विद्यालयों में असमर्थ बच्चों को प्राकृतिक वातावरण प्राप्त होता है। असमर्थ बच्चे समर्थ बच्चों के साथ रहते-रहते अपने आपको सहजता से उनके साथ समायोजित कर लेते हैं।

III. **मानसिक विकास**—विशिष्ट बच्चों को विशेष विद्यालयों व प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। इससे उनमें हीन भावना पैदा होती है कि हमें सामान्य बच्चों के साथ क्यों नहीं पढ़ाया जा रहा। इस बात का उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन समन्वित शिक्षा विशिष्ट बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामान्य विद्यालयों में प्रदान की जाती है, इससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

IV. **समानता का सिद्धान्त**—हमारे संविधान में प्रत्येक बालक के लिए समान शिक्षा देने की बात कही गयी है, बिना किसी भेदभाव के। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समन्वित शिक्षा की आवश्यकता है।

V. **कम खर्चीली**—विशिष्ट शिक्षा देने के लिए विशेष अध्यापक, विशेष प्रकार की शिक्षण विधियाँ, विशेष पाठ्यक्रम व विशेष शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होती है जो काफी खर्चीली होती है। इसके अतिरिक्त समाकलित शिक्षा सामान्य विद्यालयों में प्रदान की जाती है जो कम खर्चीली है।

इस प्रकार विशिष्ट बच्चों को विशिष्ट शिक्षा की अपेक्षा समाकलित या समन्वित शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

1.21 एकीकृत शिक्षा के उद्देश्य
(Objective of Integrated Education)

(i) एकीकृत शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बच्चों में एक-सी शिक्षा करता है।

(ii) एकीकृत शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालकों का मानसिक विकास बढ़ता है तथा इससे उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

(iii) इस शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बालक बिना किसी भेदभाव के एकीकृत शिक्षा को प्राप्त कर सकते हैं।

(iv) विशिष्ट बालकों में हीनभावना को खत्म करने में यह शिक्षा मदद करती है।

(v) विशिष्ट बालकों को समाज में तथा प्राकृतिक वातावरण में सहजता से समायोजित करने में यह शिक्षा मदद करती है।

(vi) एकीकृत शिक्षा सामान्य व विशिष्ट बच्चों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करती है।

1.22 समावेशी शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Inclusive Education)

शिक्षा में समावेश एक ऐसे मॉडल को संदर्भित करने के लिए होता है जिसमें छात्रों को स्पेशल या सामान्य (सामान्य शिक्षा) छात्रों की जरूरत वाले छात्रों के साथ अपना ज्यादातर समय बिताना पड़ता है। यह एक व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम या 504 योजना के साथ विशेष शिक्षा के सन्दर्भ में उत्पन्न होता है, और इस धारणा पर बनाया गया है कि यह विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए अधिक प्रभावी रहेगा।

ये प्रणाली मुख्य रूप से स्पेशल छात्रों के लिए बनाई गयी है जो किसी न किसी कारण से साधारण छात्रों से भिन्न होते हैं और उन्हें अलग और स्पेशल शिक्षा और माहौल की आवश्यकता होती है।

क्षतियुक्त और विशिष्ट बालकों को मुख्य धारा में शामिल करने से भी अधिक उनकी भलाई के विषय में सोचना समावेश का ध्येय है। समावेशित शिक्षा शारीरिक और मानसिक रूप से क्षतिग्रस्त बच्चों को सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देती है और विशिष्ट बालकों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनुमोदन करती है। यदि किसी विशिष्ट बालक को विशेष शिक्षा और सहायता की आवश्यकता होती है तो उसे विशिष्ट या अपंग न कह कर उसकी आवश्यकतानुसार शिक्षा तथा मदद दी जाती है। इस प्रकार समावेशित शिक्षा में मुख्य धारा तथा एकीकरण का सहारा लेकर सभी बालकों को एक साथ शिक्षित करने के उद्देश्य पर बल दिया जाता है। इस तरह से विशिष्ट और सामान्य बच्चों में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता।

- **माइकेल एफ. जिआन ग्रैको** के अनुसार, ''समावेशी शिक्षा से अभिप्राय उन मूल्यों, सिद्धान्तों और प्रथाओं के समूह से है जो सभी विद्यार्थियों को, चाहे वे विशिष्ट हैं अथवा नहीं, प्रभावकारी और सार्थक शिक्षा देने पर बल देते हैं।''

  ''Inclusive education is a set of values, principles and practices that seeks more effective and meaningful education for all students, regardless of whether they have exceptionality labels or not.'' —**Michael F. Giangreco**

- **स्टेनबैक एवं स्टेनबैक** का विचार है कि ''समावेशी विद्यालय अथवा पर्यावरण से अभिप्राय ऐसे स्थान से है जिसका प्रत्येक व्यक्ति अपने को सदस्य मानता है, जिसको अपना समझा जाता है, जो अपने साथियों और विद्यालय कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य की सहायता करता है और अपनी शिक्षा प्राप्ति सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उनसे सहायता प्राप्त करता है।''

- ''Inclusive school or set-up may be defined as a place where everyone belongs, is accepted, supports and is supported by his or her peers and other members of the school community in the course of having his or her educational needs met.'' —**Stainback and Stainback**

- **एम. मैनीवन्नान** के अनुसार, ''समावेशी शिक्षा उस नीति तथा प्रक्रिया का परिपालन है जो सब बच्चों को सभी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये अनुमति देती है। नीति से तात्पर्य है कि अपंग बालकों को बिना किसी अवरोध के सामान्य बालकों के सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये स्वीकृति प्रदान करे। समावेशी प्रक्रिया से अभिप्राय पद्धति के उन साधनों से है जो इस प्रक्रिया को सबके लिये सुखद बनाये। समावेशी शिक्षा क्षतियुक्त बालकों के लिये सामान्य शिक्षा के अभिन्न अंग के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यह सामान्य शिक्षा के भीतर अलग से कोई प्रणाली नहीं है।''

  "Inclusive education is the implementation of the policy and process that allows all children to participate in all programmes. Policy means that disabled children should be accepted without any restrictions in all the educational programmes meant for other children. The process of inclusion denotes the ways in the system makes itself welcoming to all. Inclusive education is nothing but making the programme for disabled children as an integral part of the general educational system rather than a system within general education." —**M. Manivannan**

- **उप्पल एवं डे** के अनुसार, ''सामान्य बच्चों और विशिष्ट बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं के संक्रमण और मेल को समावेशी शिक्षा के नाम से अभिहित किया गया है, ताकि सभी बच्चों के लिये सामान्य विद्यालयों में शिक्षा देने हेतु एक ही पाठ्यक्रम हो। यह एक लचीली तथा व्यक्तिगत रूप से विशिष्ट बच्चों और नवयुवकों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सहायक प्रणाली है। यह समग्र शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न घटक है जो सामान्य स्कूलों में सबके लिये उपयुक्त शिक्षा के रूप में प्रदान किया जाता है।''

  "Inclusive education implies synchronization of the educational needs of the normal children and the educational requirements of the children with special needs, so as to evolve a common curriculum with a view to provide education to all in regular schools itself. It is a flexible and individualized support system for children and young people with special educational needs. It provides an integral component of the overall education system and is provided in regular schools committed in an appropriate education for all."

  —**Uppal and Dey**

- **अडवानी और चड्ढा** का विचार है कि ''समावेशी शिक्षा का उद्देश्य एक सहायक तथा अनुकूल पर्यावरण की रचना करना है, ताकि सभी को पूर्ण प्रतिभागिता के लिये समान अवसर प्राप्त हो सकें और इस तरह से विशेष आवश्यकता वाले बालक शिक्षा की मुख्य धारा के क्षेत्र में सम्मिलित हो सकें। यह विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं के महत्त्व को समझती है। यह उपयुक्त पाठ्यक्रम, शिक्षण युक्तियों, सहायक सेवाओं, तथा समाज व माता-पिताओं के सहयोग के द्वारा सभी को समान शिक्षा प्रदान करने का विश्वास दिलाती है।''

  "Inclusive education aims to provide a favourable setting for achieving equal opportunity and full participation for all, thus bringing children with special needs well within the purview of mainstream education. It recognises the diverse needs of the students and ensures equality education to all through appropriate curricula, teaching strategies, support services and partnership with the community and parents. In simple words, it means that all children with or without disabilities learn together." —**Advani and Chaddha**

1.23 समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Inclusive Education)

समावेशी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

I. **सभी के लिये विद्यालय में सब हेतु शिक्षा (Education for All in the Schools for All)**—समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत बाधित (शारीरिक रूप से विकलांग) बच्चों एवं सामान्य बच्चों हेतु सभी स्कूलों में सभी के लिये शिक्षा के प्रावधान किये गये हैं।

II. **विभिन्नताओं की पहचान तथा चिन्ता करना (Recognizing and Taking Care of Diversity)**—समावेशी शिक्षा पद्धति बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि अनेक विभिन्नताओं की पहचान करती है, उन्हें अंगीकृत कर तद्नुसार जरूरतों को ध्यान में रखते हुए संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा सृजनात्मक विकास के अवसर उपलब्ध कराती है।

III. **विशिष्ट शैक्षिक जरूरतों वाले बच्चों की स्वीकृति एवं समर्थन (Acceptance and Support to Children Having Special Educational Needs)**—समावेशी शिक्षा विशिष्ट शैक्षिक जरूरतों वाले बच्चों यथा—शारीरिक रूप से बाधित श्रवण, दृष्टि व वाक् बाधित, मानसिक रूप से असमर्थ आदि करीब सभी प्रकार के बच्चों को उनकी वर्तमान शारीरिक अथवा मानसिक अवस्था में स्वीकृत करती है तथा उन्हें समर्थन प्रदान करती है, जिससे उन्हें विकास के इष्टतम अवसर प्राप्त हो सकें।

IV. **शिक्षा एक मौलिक अधिकार (Education as a Basic Right)**—समावेशी शिक्षा, शिक्षा के मौलिक अधिकार को सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक रूप में स्वीकृत करती है। हालांकि शिक्षा की अन्य प्रणालियों में भी बच्चों के शिक्षा के अधिकार को स्वीकृत किया गया है, परन्तु समावेशी शिक्षा पद्धति में इस अधिकार की भावना सर्वाधिक विद्यमान है। इस शिक्षा पद्धति में यह प्रावधान किया गया है कि किसी भी विद्यालय द्वारा किसी भी निम्न शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक स्तर के बच्चे को प्रवेश लेने के अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता है।

V. **विभिन्नताएँ कोई समस्या नहीं (Diversity is not a Problem)**—इस शिक्षा पद्धति में बच्चों की बढ़ती हुई विभिन्नताओं को कोई समस्या नहीं समझा जाता है। भाषा, धर्म, लिंग, संस्कृति, सामाजिक एवं शारीरिक-मानसिक गुणों की विभिन्नता बच्चों को परस्पर सीखने, सामाजिक रूप से सह-सम्बन्धित होने एवं समायोजित होने के दुर्लभ अवसर उपलब्ध कराती है।

VI. **सुदृढ़ नीतियाँ तथा नियोजन (Stronger Policies and Planning)**—समावेशी शिक्षा में शिक्षा के अधिकार की रक्षा करने एवं उसे लागू करने हेतु राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर नीतियाँ सुदृढ़ व स्पष्ट हैं और इन नीतियों का नियोजन भी बड़े सफल तरीके से किया जा रहा है। यही वजह है कि गत दस वर्षों में बच्चों की शिक्षा-विशेषकर असमर्थ बच्चों के प्रति स्कूलों, अध्यापकों एवं समाज की अभिवृत्ति में अधिकाधिक बदलाव देखने को मिला है।

VII. **विद्यालय का प्रयत्न अभियोजन (Adaptation on the Part of the School)**—समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत स्कूल विद्यार्थियों की जरूरतों

के मुताबिक ही अभियोजन करता है। इस शिक्षा पद्धति में सामान्य शिक्षण पद्धति की भाँति बच्चों को स्कूल के साथ अभियोजन नहीं करना पड़ता।

नई एकीकृत शिक्षा योजना, 2020

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने 01 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च, 2020 के लिए नई एकीकृत शिक्षा योजना बनाने के स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। प्रस्तावित योजना में, सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए) और शिक्षक शिक्षण अभियान समाहित होंगे। प्रस्तावित योजना के लिए ₹ 75 हजार करोड़ मंजूर किये गये हैं। यह राशि मौजूदा आवंटित राशि से 20 प्रतिशत अधिक है।

प्रस्तावित योजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा के विजन के परिप्रेक्ष्य में लाई गई है तथा इसका लक्ष्य पूरे देश में प्री–नर्सरी से लेकर बारहवीं तक की शिक्षा सुविधा सबको उपलब्ध कराने के लिए राज्यों की मदद करना है।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ–योजना का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सतत् विकास के लक्ष्यों के अनुरूप नर्सरी से लेकर माध्यमिक स्तर तक सबके लिए समान रूप से समग्र और गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करना है। एकीकृत स्कूली शिक्षा योजना में शिक्षकों और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने पर खास जोर दिया गया है।

योजना के मुख्य उद्देश्य–स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

(i) गुणवत्ता युक्त शिक्षा की व्यवस्था और छात्रों की सीखने की क्षमता में वृद्धि।
(ii) स्कूली शिक्षा में सामाजिक और लैंगिक असमानता को पाटना,
(iii) स्कूली शिक्षा के सभी स्तर पर समानता और समग्रता सुनिश्चित करना।
(iv) स्कूली व्यवस्था में न्यूनतम मानक सुनिश्चित करना।
(v) शिक्षा के साथ व्यवसायीकरण प्रशिक्षण को बढ़ावा देना।
(vi) निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार, 2009 को लागू करने के लिए राज्यों की मदद करना तथा।
(vii) राज्यों की शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों, शिक्षण संस्थाओं और जिला शिक्षण और प्रशिक्षण संस्थाओं (डीआईईटी) को शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए नोडल एजेंसी के रूप में सशक्त और उन्नत बनाना।

योजना का प्रभाव–इस योजना से राज्यों और संघ शासित प्रदेशों को अपने उपलब्ध संसाधनों के हिसाब से अपनी प्राथमिकता तय करने और योजना के प्रावधान लागू करने का अवसर मिलेगा। इससे स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों में बच्चों के आगे शिक्षा जारी रखने के मामलों में बढ़ोतरी होगी तथा बच्चों को अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के लिए सार्वभौमिक रूप से मौका मिलेगा। योजना का उद्देश्य बच्चों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ ही उन्हें विभिन्न तरह के कौशल और ज्ञान में दक्ष बनाना है जो उनके सर्वांगीण विकास के साथ ही भविष्य में कार्यजगत में जाने और उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए आवश्यक है। योजना से बजटीय आवंटन का बेहतर और मानव संसाधन तथा पूर्ववर्ती योजनाओं के लिए तैयार की गई संस्थागत संरचनाओं का प्रभावी इस्तेमाल हो सकेगा।

योजना के लाभ–

(i) शिक्षा के संदर्भ में समग्र दृष्टिकोण।
(ii) पहली बार स्कूली शिक्षा के लिए उच्चतर माध्यमिक और नर्सरी स्तर की शिक्षा का समावेश।
(iii) सम्पूर्ण इकाई के रूप में स्कूलों का एकीकृत प्रबंधन।
(iv) गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर ध्यान, सीखने की क्षमता को बेहतर बनाने पर जोर।
(v) शिक्षकों के क्षमता विकास को बढ़ाना।
(vi) शिक्षक प्रशिक्षण गुणवत्ता सुधार के लिए एससीईआरटी जैसे शिक्षक शिक्षण संस्थाओं और डीआईईटी को सशक्त बनाना।
(vii) डीटीके चैनल, डिजिटल बोर्ड और स्मार्ट क्लासरूप के जरिए शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को बढ़ावा देना।
(viii) स्वच्छ विद्यालय की मदद के लिए स्वच्छता गतिविधियों की विशेष व्यवस्था।
(ix) सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता सुधारना।
(x) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने के लिए, कक्षा 6-8 से लेकर 12वीं कक्षा तक, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का उन्नयन।
(xi) स्कूलों में कौशल विकास पर जोर।
(xii) खेलो इण्डिया के समर्थन में स्कूलों में खेलों और शारीरिक रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों की व्यवस्था।
(xiii) शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े ब्लॉकों, चरमपंथ प्रभावित राज्यों, विशेष ध्यान देने वाले राज्यों/जिलों और सीमावर्ती इलाकों और विकास की आकांक्षा वाले 115 जिलों को प्राथमिकता।

1.24 विशिष्ट, एकीकृत तथा समावेशी शिक्षा के मध्य अन्तर
(Difference Among the Special, Integrated and Inclusive Education)

विशिष्ट शिक्षा	समन्वित शिक्षा	समावेशी शिक्षा
• विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बालकों को अलग-अलग शिक्षा प्रदान करती है।	समन्वित शिक्षा विशिष्ट व सामान्य बालकों को साथ- साथ व समान रूप से शिक्षा प्रदान करती है।	समावेशी शिक्षा प्रतिभाशाली व सामान्य बालकों को एक साथ पूर्ण समय में शिक्षा प्रदान करती है।
• विशिष्ट शिक्षा भेदभाव के सिद्धान्त पर आधारित है।	समन्वित शिक्षा समानता के सिद्धान्त पर आधारित है।	समावेशी शिक्षा समानता के आधार पर है।
• विशिष्ट शिक्षा, शिक्षा प्रदान करने का एक पुराना विचार है।	समन्वित शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का नवीन व प्रगतिशील रूप है।	समावेशी शिक्षा नये एवं पुराने विचारों दोनों के रूप में है।

विशिष्ट शिक्षा	समन्वित शिक्षा	समावेशी शिक्षा
• विशिष्ट शिक्षा अधिक महँगी व खर्चीली शिक्षा है। • विशिष्ट शिक्षा कुछ-कुछ चिकित्सा का रूप रखती है। • यह व्यवस्था अपंग तथा सामान्य बालकों को अलग-अलग करती है।	समन्वित शिक्षा कम खर्चीली होती है। समन्वित शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है। इस व्यवस्था में शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में अपंग तथा सामान्य व बालकों के साथ-साथ समान रूप से रखा जाता है।	समावेशी शिक्षा कम खर्चीली होती है। समावेशी शिक्षा वैज्ञानिक आधार पर है।

किसी कक्षा में विभिन्न तरह के बच्चे होते हैं जिनकी अपनी–अपनी आवश्यकताएँ हो सकती हैं। जैसे–कुछ बच्चे अक्षरों को उल्टा लिखते हैं, कुछ की श्रवण शक्ति कम होती हैं, कुछ मंद बुद्धि वाले होते हैं। सभी बच्चे सामान्य गति से नहीं सीख पाते हैं। कुछ बच्चों का उच्चारण स्पष्ट नहीं होता है जिसके कारण इन बच्चों का विकास एवं दैनिक कार्यशीलता प्रभावित होती है। इन्हीं भिन्नताओं के कारण इन बच्चों के पालन–पोषण में कुछ भिन्न या विशिष्ट तरीके अपनाने की आवश्यकता होती है। उनकी शिक्षा के लिए विशेष योजना बनानी पड़ती है, यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि उनके अनुकूलतम विकास को बढ़ावा मिले। अभिभावकों और शिक्षकों को इन बच्चों को बोलना सिखाने, चलने–फिरने, मित्र बनाने और वे कौशल और संकल्पनाएँ, जो सामान्य बच्चे विकास के दौरान सहज रूप से प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें अर्जित करने और सिखाने के लिए विशेष प्रयास करने होते हैं। इन बच्चों की कुछ ऐसी आवश्यकताएँ हैं जो अधिकांश बच्चों की जरूरतों से भिन्न होती हैं, अर्थात् उनकी कुछ विशेष जरूरतें होती हैं।

भारत में एकीकृत शिक्षा का प्रारम्भ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1974 में कल्याण मंत्रालय द्वारा चलाई गयी "विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा" (इन्टिग्रेटेड एजुकेशन फॉर डिसेबल्ड चिल्ड्रेन) जिसको संक्षेप में आई.डी.सी. योजना भी कहते हैं, से हुई। (शर्मा, 2004)।

वर्ष 2018 के पेपर्स में पूछे गए प्रश्न

1. किसने कहा, ''शिक्षा एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क बनाना है।''
Who said "Education is the creation of a sound mind in a sound body"?
(A) प्लूटो/Plato
(B) अरस्तु/Aristotle
(C) सुकरात/Socrates
(D) रूसो/Roussseau
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

1. (B) अरस्तु ने कहा कि ''शिक्षा एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क बनाना है।''

2. निम्नलिखित में से कौन–सी अनौपचारिक शिक्षा है ?
Which of the following is informal Education ?
(A) सरकारी प्राथमिक विद्यालय/Government Primary School
(B) गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालय/Non-Government Secondary Schools
(C) विश्वविद्यालय/Universities
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं/None of the above
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

2. (D) अनौपचारिक शिक्षा जीवनपर्यन्त चलती है। अनौपचारिक शिक्षा वह होती है जो अनायास, आकस्मिक और स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है। इस प्रकार की शिक्षा बालक अपने परिवार, आस–पड़ोस, खेल का मैदान आदि सार्वजनिक स्थानों पर उठते–बैठते, खेलते–कूदते, बातचीत करके प्राप्त कर सकता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अनौपचारिक शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक महत्त्व है।

3. व्यावहारिकता का संस्थापक कौन है ?
Who is the founder of Functionalism ?
(A) विलियम जेम्स/William James
(B) विल्हेम वुंट/Wilhelm Wundt
(C) जॉन बी. वॉटसन/John B. Watson
(D) सिग्मण्ड फ्रॉयड/Sigmund Freud
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

3. (C) व्यावहारिकता के संस्थापक जॉन, बी. वॉटसन हैं।

4. मनोविज्ञान के व्यवहारवाद दर्शन के पिता कौन हैं ?
Who is the father of Behaviourist School of Psychology ?
(A) सिग्मण्ड फ्रॉयड/Sigmund Freud
(B) विल्हेम वुट/Wilhelm Wundt
(C) जॉन बी. वॉटसन/John B. Watson
(D) विलियम जेम्स/William James
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

4. (C) मनोविज्ञान में व्यवहारवाद का प्रारम्भ 20वीं सदी के दशक में हुआ मनोविज्ञान के व्यवहारवाद दर्शन के पिता जॉन. बी. वॉटसन हैं।

5. बिना किसी विशिष्ट उद्देश्य, निश्चित अवधि और स्थान के प्राप्त शिक्षा.....कहलाता है।
What is called education acquired without any specific purpose, fixed period and place ?
(A) अप्रत्यक्ष शिक्षा/Indirect Education
(B) वैयक्तिक शिक्षा/Individual Education
(C) अनौपचारिक शिक्षा/ Informal Education
(D) औपचारिक शिक्षा/Formal Education
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

5. (C) बिना किसी विशिष्ट उद्देश्य, निश्चित अवधि और स्थान के प्राप्त शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा कहलाती है।

6. शिक्षा का एक औपचारिक अभिकरण है–
A formal agency of education :
(A) बाजार स्थान/ Market place
(B) परिवार/Family
(C) विद्यालय/School
(D) प्रदर्शनी/Exhibitions
(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

6. (C) विद्यालय शिक्षा का एक औपचारिक अभिकरण है। यह व्यक्ति को आचरणयुक्त और चरित्रवान बनाती है। इसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ स्थान, समय सब कुछ निश्चित होता है।

7. शिक्षा का लक्ष्य–
Aim of education :
(A) उत्पादन बढ़ाना/ Increasing productivity
(B) सामाजिक और राष्ट्रीय अखण्डता प्राप्त करना/Achieving social and national integraion
(C) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज

करना/ Accelerating the process of modernization

(D) उपर्युक्त सभी/ All of the above

(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

7. (C) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज करना शिक्षा का लक्ष्य है।

8. शैक्षणिक मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा 'शिक्षण और अध्ययन' का अध्ययन.....द्वारा दी गई है।

The best definition of educational psychology is a study of 'teaching and learning' has been given by :

(A) डब्ल्यू. कोलेंसिक/W. Kolensik

(B) जेम्स लॉस/James Loss

(C) चार्ल्स ई. स्किनर/Charles E. Skiner

(D) एन. एल. मुन्न/N. L. Munn

(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

8. (C) शैक्षणिक मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा ''शिक्षण और अध्ययन का अध्ययन'' चार्ल्स ई. स्किनर द्वारा दी गई है।

9. निम्नलिखित में से कौन–सा 'समावेशी शिक्षा' का एक तत्व नहीं है?

Which of the following is not an element of 'Inclusive Education'?

(A) विविधता के लिए सम्मान/ Regard for diversity

(B) शून्य अस्वीकृति/Zero rejection

(C) विशिष्ट कक्षा स्थापन/ Special Class Placement

(D) सहकार्यता/ Collaboration

(परीक्षा तिथि : 22-07-2018)

9. (C) विशिष्ट कक्षा स्थापन 'समावेशी शिक्षा' का एक तत्व नहीं है।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

1. ''शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है'' यह कथन है –
(A) एडम्स का (B) रॉस का
(C) डीवी का (D) रूसो का

2. मनुष्य की अन्तःनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है, यह परिभाषा है –
(A) स्वामी दयानन्द की
(B) स्वामी विवेकानन्द की
(C) महात्मा गाँधी की
(D) रबीन्द्रनाथ टैगोर की

3. एडम्स ने शिक्षा को माना है –
(A) बहुमुखी शिक्षा (B) द्विमुखी शिक्षा
(C) त्रिमुखी शिक्षा (D) चतुर्मुखी प्रक्रिया

4. 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है'। यह कथन किसका है ?
(A) प्लेटो (B) अरस्तू
(C) एडम्स (D) सुकरात

5. ''शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना जिसके कि वे योग्य है।'' किसका कथन है ?
(A) जॉन डीवी (B) प्लेटो
(C) हार्ने (D) अरस्तू

6. शिक्षा मनोविज्ञान है–
(A) व्यावहारिक विज्ञान
(B) मानक विज्ञान
(C) विशुद्ध विज्ञान
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

7. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि–
(A) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(B) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(C) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके
(D) इससे शिक्षक को आत्म-सन्तुष्टि मिल सके

8. ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को संजोये है।'' कथन था–
(A) टिचनर का (B) वुण्ट का
(C) वुडवर्थ का (D) मैक्डूगल का

9. निम्न में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है ?
(A) अन्तर्दर्शन (B) बहिर्दर्शन
(C) अवलोकन (D) प्रयोगीकरण

10. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है ?
(A) बच्चे यथावत् वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है।
(B) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं।
(C) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।
(D) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है।

11. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है व्यक्ति के....का विकास करना।
(A) ज्ञान (B) शरीर
(C) व्यक्तित्व (D) बुद्धिमता

12. वह शिक्षा जो योजनाबद्ध और व्यवस्थित ढंग से प्रदान की जाती है –
(A) औचचारिक शिक्षा
(B) अनौपचारिक शिक्षा
(C) निरौपचारिक शिक्षा
(D) इनमें से कोई नहीं

13. .....शिक्षा जीवनपर्यन्त चलती रहती है।
(A) निरौपचारिक शिक्षा
(B) औपचारिक शिक्षा
(C) अनौपचारिक शिक्षा
(D) प्रत्यक्ष शिक्षा

14. शिक्षा का लक्ष्य है –
(A) उत्पादन बढ़ाना
(B) सामाजिक और राष्ट्रीय अखंडता प्राप्त करना
(C) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज करना
(D) उपर्युक्त सभी

15. मनोविज्ञान शब्द का उपयोग सर्वप्रथम किसने किया ?
(A) विलियम मैक्डूगल
(B) वर्हीमर
(C) हरबर्ट
(D) लान्जे

16. मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में सर्वप्रथम किसने परिभाषित किया ?
(A) वाटसन (B) एविंग्हॉस
(C) मैक्डूगल (D) थार्नडाइक

17. मनोविज्ञान की सर्वप्रथम प्रयोगशाला की स्थापना निम्न में से किस मनोवैज्ञानिक ने की ?
(A) फ्रान्सिस गाल्टन
(B) विलियम मैक्डूगल
(C) फेकनर
(D) विलियम वुण्ट

18. आधुनिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में–
(A) मनोविज्ञान मन का विज्ञान है।
(B) मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है।
(C) मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहार का विज्ञान है।
(D) मनोविज्ञान प्राणी के चेतना का विज्ञान है।

व्याख्यात्मक हल

1. (C) जॉन डयूवी के अनुसार ''शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी के साथ पाठ्यक्रम भी शामिल किया जाता है क्योंकि

पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षण कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है।

2. (B) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

3. (B) जॉन एडम्स ने इस सम्बन्ध में कहा है– शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन हो सके।

4. (B) अरस्तू के अनुसार ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है।''

5. (B) प्लेटो के अनुसार ''शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना जिसके कि वे योग्य है।''

6. (A) मानव व्यवहार के परिमार्जन के लिए मानव व्यवहार का अध्ययन करने की आवश्यकता स्वतः ही स्पष्ट हैं। मनुष्य के व्यवहार को उन्नत बनाने की दृष्टि से जब व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तो अध्ययन की इस शाखा को शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से जाना जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है 'शिक्षा' व 'मनोविज्ञान' अतः इसका शाब्दिक अर्थ है 'शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान' दूसरे शब्दों में यह मनोविज्ञान का व्यवहारिक रूप है व शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अतः हम स्किनर के शब्दों में जानते हैं कि "शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"

7. (C) मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार से होता है। शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। अतः अध्यापक को अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता लेनी चाहिए।

8. (C) **वुडवर्थ** के शब्दों में–''सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया फिर इसने मन का त्याग किया। पुनः इसने चेतना का त्याग किया। अभी वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।''

9. (A) शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि अन्तर्दर्शन विधि होती है। जिसके द्वारा विद्यार्थी या व्यक्ति के जीवन के इतिहास को जाना जाता है।

10. (B) **जीन पियाजे** के अनुसार, ''बच्चे दुनिया के बारे में अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।'' सृजनात्मकता स्व-स्फूर्ति होती है, जिसकी अभिव्यक्ति छात्र स्वयं के ज्ञान से करता है।

11. (C) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना है। शिक्षाशास्त्री टी.पी. यन के अनुसार ''शिक्षा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करता है जिससे कि व्यक्ति अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार मानव जीवन में योगदान दे सकें।

12. (A) औपचारिक शिक्षा में योजना पहले से ही निर्धारित कर ली जाती है। इसके लक्ष्य भी निर्धारित कर लिये जाते हैं। इसमें बालक को निश्चित व्यक्ति द्वारा नियमित रूप से निश्चित समय पर निश्चित ज्ञान दिया जाता है।

13. (C) अनौपचारिक शिक्षा जीवनपर्यन्त चलती रहती है। यह शिक्षा का कोई निश्चित समय, स्थान या नियम नहीं होता है। यह कहीं से भी प्राप्त की जा सकती है। जैसे– परिवार, आस–पड़ोस, खेल का मैदान आदि।

14. (C) शिक्षा का लक्ष्य आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज करना है अर्थात् आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गतिशील और तीव्र बनाने में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि व्यक्ति के व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण करती है तथा लोगों को परिवर्तन ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है तथा ऐसे वातावरण का सृजन करती है जिससे लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्ण ग्रहण करें।

15. (D) मनोविज्ञान शब्द का उपयोग सर्वप्रथम लान्जे ((1866) ने अपनी पुस्तक History of Materialism में किया था। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा था कि विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान में आत्मा का वर्णन उपेक्षित हो रहा है और इस विज्ञान में मानसिक तथ्यों का वर्णन होने लगा है।

16. (A) मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में सर्वप्रथम वाटसन ने 1913 में परिभाषित किया।

17. (D) मनोविज्ञान की सर्वप्रथम प्रयोगशाला की स्थापना विलियम वुण्ट ने 1879 में की थी। उनकी यह प्रयोगशाला जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में स्थापित हुई।

18. (C) आधुनिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहार का विज्ञान है जो 20वीं शताब्दी में बताया गया। मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान मानने वाले वैज्ञानिक ई.जी. पिल्सबरी थे।

प्प